भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **मार्च** 2009 | **अंक** 3

''अच्छी पुस्तकों के पास होने से हमें अपने भले मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खटकती।''

— महात्मा गाँधी

पुस्तक माहात्म्य

श्रेष्ठ पुस्तकें जो पढ़े, उसका बढ़े विवेक।
बिन विवेक बनता नहीं, कोई मानव नेक॥
ऐसी पुस्तक बाँचिये, जिसका लक्ष्य महान।
तरह-तरह के ज्ञान हैं, भाँति-भाँति विज्ञान॥
नित बढ़ता है ज्ञान का, यह असीम संसार।
पास अगर हों पुस्तकें, सब कुछ है निस्सार॥
शब्द-साधना जो करे, साधक वही महान।
शब्दों की धूनी रमे, मिल जायें भगवान॥
वह घर मंदिर जानिए जहँ पुस्तक का वास।
पुस्तक पढ़ि-पढ़ि पायेंगे, सब जन परम प्रकाश॥

—गिरीश पंकज

''यदि हम प्रत्येक भारतीय के नैसर्गिक अधिकारों के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं, तो हमें राष्ट्रभाषा के रूप में उस भाषा को स्वीकार करना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाती है, अर्थात्—हिन्दी।''

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दी के प्रति

परम पूज्य भाषा है हिन्दी हमारी,
इसी का सदा मैं उदय चाहता हूँ।
सभी लोग जानें, सभी लोग मानें,
सभी लोग सीखें, सभी लोग बोलें।
इसी में मधुर गान सर्वत्र गूँजे,
यही देखना हर समय चाहता हूँ।
इसी को पढ़ूँ मैं, इसी को लिखूँ मैं,
इसी में जिऊँ मैं, मरूँ मैं इसी में।
इसी के निलय में, इसी के प्रलय में,
मैं सर्वस्व अपना विलय चाहता हूँ।
इसी में छिपी है सुसंस्कृति हमारी,
है भारत की पहचान सम्भव इसी से।
पढ़े छात्र विद्यालयों में निरन्तर,
यही देखना हर समय चाहता हूँ।

— डॉ० रामसुमेर यादव, लखनऊ

''हिन्दी के द्वारा सारा भारतवर्ष एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।'' **—स्वामी दयानन्द**

प्रासंगिक-प्रार्थना

पत्तियाँ झर रही हैं, हवा में खुनक है, मौसम बदल रहा है। बदलाव की इस बयार में कलियाँ चिटकती हैं, कोंपलें फूटती हैं। ताम्र-हरित पल्लवों और रंग-बिरंगे फूलों से शृंगार करती प्रकृति, नवांकुरों का उन्माद लेकर बढ़ चलती है अपने प्रियतम की ओर। अचानक उसके कदम ठिठक जाते हैं। वह भयभीत हो जाती है, उसके आकाश पर ऋतुराज वसंत की जगह किसी अदृश्य आतंक का सन्नाटा पसरा हुआ है।

दूसरी ओर जंगल काट दिये गये हैं और शेर बाहर बस्तियों में जगह तलाश रहे हैं। नरभक्षी-गर्जना से डरा हुआ आदमी अपने वर्म-कवच में छुपने की नाकाम-कोशिश कर रहा है, अपने घरों के दरवाज़े बन्द कर रहा है। इसी भयग्रस्त वातावरण में हमारी लोकसभा ने अपने कार्यकाल का अन्तिम-सत्र पूरा किया। बजट सत्र में जहाँ रेलमंत्री ने आगामी चुनाव के मद्देनज़र राहतें कायम रखीं, कुछ नयी घोषणाएँ कीं। वहीं बजट प्रस्तुत करते हुए वित्तमंत्री ने तीस हज़ार करोड़ का पैकेज देते हुए वैश्विक-मंदी से ग्रस्त भारतीय बाज़ार को सँभालने की कोशिश की। किन्तु यह कोशिश तभी कारगर होगी जब लोग बाज़ार का रुख करें, खरीदारी करें ताकि पूँजी का प्रवाह बना रहे अन्यथा यह पैकेज भी निष्प्रभावी सिद्ध होगा।

इधर वसंत के उन्माद और बाज़ार के गुणा-गणित के बीच चल रही हैं चुनावी सरगर्मियाँ। प्रत्येक राजनयिक-दल अपने-अपने महारथियों के चयन में व्यस्त है। जेलों में निरुद्ध बाहुबली भी मैदान में ताल ठोंक रहे हैं। मगर सारी मशक्कत के बावजूद वोटर-लिस्ट से न-दारद है आम-आदमी। वोटिंग-परसेंटेज के आँकड़ों की आड़ में छुपे हुए लोग भी तो आतंकित हैं, डरे हुए। आखिर यह कैसा भय है जिससे आक्रान्त हैं हम और हमारी दुनिया। अनादिकाल से स्वयं प्रकृति मनुष्य को भय से जूझने और भय-मुक्त होने का पथ प्रशस्त करती रही है। सभ्यता, संस्कृति के कलेवर में ढलती रही है। संस्कृति के उसी चिदानंदमय-आकाश की ओर बढ़ते हुए कवि का उद्‌गान हमारे आज की **प्रासंगिक-प्रार्थना** है—

''जहाँ चित्त निर्भय हो, शीश जहाँ उन्नत हो, ज्ञान जहाँ मुक्त हो और घरों की संकीर्ण दीवारों के बीच जहाँ बंदिनी न बनी हो धरती, जहाँ शब्द सत्य की गहराईयों से उभरते हों, जहाँ पूर्णता के लिये संघर्ष करती अक्लांत-भुजाएँ पसरी हों, जहाँ मृत-परम्परा की उजाड़ मरुभूमि में विचार का निर्मल-स्त्रोत अवरुद्ध न हो, जहाँ मन सदा विचार और कर्म में विस्तार प्राप्त करता हो, उस दिव्य भूमि में जागृत हो मेरा देश, जागृत हों जन-जन!''

सर्वेक्षण

उत्थान—अन्तर्राष्ट्रीय दबावों के बीच भारतीय शिक्षा-क्षेत्र में गुणवत्तापरक-विकास का जो क्रम पिछले दशक से आरम्भ हुआ, उसके परिणाम दिखायी देने लगे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार दूसरे एशियाई-देशों के शैक्षणिक-स्तर के समान्तर भारत

शेष पृष्ठ 2 पर

किताबें पढ़ने से दिमाग रहेगा स्वस्थ्य

अगर आप यह सोचते हैं कि किताबें केवल हमारी जानकारी बढ़ाती हैं या ये सिर्फ ज्ञान का स्रोत हैं, तो अपनी इस धारणा को बदल डालिए। यह कहना है अमेरिकन एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी के विशेषज्ञों का। विशेषज्ञों के अनुसार किताबें हमारे दिमाग को चुस्त-दुरुस्त रखने का सबसे अच्छा माध्यम है।

अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि किताबों का हमारे दिमाग पर क्या असर पड़ता है, इस बात के परीक्षण के लिए हमने 20 साल से लेकर 70 साल तक के लोगों को शामिल किया। हमारे अध्ययन में करीब 1400 लोग शामिल थे। यह अध्ययन करीब दो दशक चला। इन लोगों को समूहों में विभाजित कर दिया गया। दोनों समूहों के लोगों को एक-एक प्रश्नोत्तरी दी गई, जिसमें इस बात से सम्बन्धित प्रश्न थे कि उन लोगों की बीते वर्षों में क्या दिनचर्या थी।

इस प्रश्नोत्तरी का अध्ययन करने के साथ ही लोगों की ब्रेन मैपिंग करने पर पता चला कि जो लोग बीते वर्षों के दौरान दिमागी क्रिया-कलापों जैसे किताबें पढ़ने, गेम खेलने आदि में व्यस्त रहे थे, उनकी दिमागी क्षमता अधिक दुरुस्त थी। इसके विपरीत जिन लोगों ने बीते वर्षों के दौरान अपना अधिकांश समय टीवी देखने या गप्पें मारने में व्यतीत किया, उनकी दिमागी क्षमता कमजोर पड़ गई थी।

वैज्ञानिकों के अनुसार जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़े, हमें अपने पढ़ने की गति बढ़ा देनी चाहिए अर्थात् प्रतिदिन कुछ न कुछ अवश्य पढ़ना चाहिए। उम्र बढ़ने के साथ किताबें पढ़ने से हमारी याददाश्त कमजोर नहीं हो पाती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि किताबें एक प्रकार से हमारे दिमाग के लिए प्रोटीन का काम करती हैं। अध्ययनकर्ताओं अनुसार सबसे खास बात यह थी कि जिन लोगों के टीवी देखने की अवधि जितनी अधिक थी, उनकी याददाश्त उतनी ही कमजोर निकली। जो लोग प्रतिदिन तीन-चार घण्टे टीवी देखते हैं उनकी याददाश्त सामान्य लोगों के मुकाबले 30 प्रतिशत कम हो जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यदि आपको पढ़ने-लिखने का शौक है, तो यकीन मानिए आपकी याददाश्त लम्बे समय तक कमजोर नहीं होने पाएगी।

निर् और आला = निराला

महाकवि निराला और पं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' में नोक-झोंक चलती रहती थी। एक बार निराला ने कहा, ''यह अपने नाम में क्या निर-निर लगा रक्खी है तुमने?''

निर्मल जी बोले—''आपके नाम में भी तो यही है।''

इस पर निराला बोल पड़े—मेरे नाम से निर् निकाल दो, तो भी मैं आला (श्रेष्ठ) रहूँगा। लेकिन तुम्हारे नाम में से निर् निकाल दें तो निरा ''मल'' ही रह जाएगा।

'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' पुस्तक से

पृष्ठ 1 का शेष

के शिक्षण-संस्थानों का स्तर ज़्यादा विकसित है। देखा गया है कि भारत में अध्ययन-रत एशियाई-देशों के प्रवासी-छात्र अपने समकक्ष भारतीय छात्र के मुकाबले बौद्धिक-स्तर पर प्राय: पिछड़े होते हैं। यद्यपि यह बात अर्धसत्य हो सकती है लेकिन यह सत्य है कि वर्तमान-दौर के प्रतियोगिता-मूलक वैश्वक-परिदृश्य में विभिन्न शिक्षा-वर्ग के भारतीय छात्रों ने प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आज भारत, शेष दुनिया के लिये शिक्षा के क्षेत्र में 'एजुकेशनल-हब' बनने की दिशा में अग्रसर है। यह एक सम्मानजनक स्थिति बन रही है जो भविष्य का शुभ-संकेत है।

पतन—दूसरी ओर हमारे देश के दरभंगा (बिहार) स्थित पॉलिटेकनिक-संस्थान में छात्र तोड़फोड़ और आगज़नी करते हैं। वजह सिर्फ इतनी थी कि उन्हें परीक्षा में नकल करने से रोका गया। परीक्षकीय-अनुशासन के विरुद्ध विद्या-मन्दिर को ही आग की लपटों में झोंक देने की मानसिकता हमारी लोकतांत्रिक अराजकता से उपजी है। इसी मानसिकता का दूसरा उदाहरण काशी विद्यापीठ, वाराणसी के छात्रों में दिखायी पड़ा। ये छात्र विद्यापीठ-परिसर में मौजूद राष्ट्रीय-गौरव की ऐतिहासिक धरोहर भारतमाता मन्दिर पहुँचे और वहाँ की पवित्रता को पद्दलित करने लगे। रक्षकों के रोकने पर मारपीट और तोड़फोड़ की। अंतत: पुलिस ने हस्तक्षेप किया। इन अराजक-तत्त्वों के पीछे भी कोई दल होगा, नेता होंगे, बाहुबली होंगे जो इनके उत्प्रेरक सूत्रधार होंगे। इस तरह की अनुशासनहीन, उच्छृंखल मानसिकता का इलाज केवल 'प्रताड़ना' नहीं, बल्कि कठोर-दंडात्मक कार्रवाई होनी चाहिए। तभी इन पर काबू पाया जा सकता है और ऐसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सकती है। अन्यथा.... ?

हमारी बानी-बोली

हज़ारों साल पहले हमारे पूर्वजों ने अपनी 'वाणी' को प्रतिष्ठा प्रदान की थी। इसी बानी-बोली को हमने अपने हृदय का हार बनाया और सप्तसिंधु का अवगाहन करते हुए उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक बह चली थी हमारी सांस्कृतिक-त्रिपथगा, गंगा। आज दोनों ही विकार-ग्रस्त हैं। नदियों की तरह प्रदूषण का शिकार हैं हमारी भाषा और संस्कृति। हिन्दी-क्षेत्र के प्रतिष्ठित अखबारों ने इस बाज़ारवादी-मनोवृत्ति को भुनाने के लिये अपनी ही भाषा को विकृत बनाने का प्रयास आरम्भ कर दिया है, जो घातक है। भाषा का यह विकार हमारे संस्कारों और संस्कृति को भी दूर तक प्रभावित करेगा, जिसकी झलक महानगरों में देखी जा सकती है। इस विकार को दूर करने के लिये शिक्षा, संस्कृति और मीडिया को समान्तर भूमिका निभानी होगी वरना यह प्रदूषण आसेतु-हिमालय तक फैली भारतीय संस्कृति की जड़ों को खोखला बना देगा। और हम क्रमश: आत्महीन, परमुखापेक्षी और अंतत: गुलाम बन जायेंगे।

नव-संवत्सर : नूतन कल्प

वसंत अपने उन्माद पर है। खेतों में सरसों फूली है, गेहूँ की बलियाँ लहरा रही हैं, रक्त-पलाश के फूल दहक रहे हैं। होली आ गयी है, संवत् जलेगा। वर्ष की तमाम विभीषिकाओं—बाज़ार की मंदी, कोसी-गंगा-गोदावरी की विनाशकारी बाढ़, पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद, आंतरिक-अराजकता आदि समेट कर होलिका-दाह के साथ दग्ध हो जायेगा वर्तमान वर्ष-संवत्सर और नये वर्ष का आरम्भ होगा। अपनी विभीषिकाओं के साथ इस वर्ष में कुछ उपलब्धियाँ भी रही हैं। नव-संवत्सर के विहान में नये दायित्वों के निर्वहन के संकल्प के साथ अग्रसर होना होगा। इसी शिव-संकल्प के साथ.....

डरो मत अरे अमृत-संतान, अग्रसर है मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र, खिंची आवेगी सफल समृद्धि।

—परागकुमार मोदी

हिन्दी साहित्य में आत्मा

सेंचुरी मनाई जा रही थी। राष्ट्रीय सेमिनार अपने तीन दिवसीय 'हलवा पूरी कचौड़ी' में था। उद्घाटन हो चुका था। उसकी खराब सी छपी ग्रन्थावली का फीता कट चुका था। दस सम्मान दिए जा चुके थे। मंच दिग्गजों के बोझ से लचक रहा था। पीछे मंच की नीली दीवार पर दस बाई बीस का पीला कपड़ा झूल रहा था।

यह एक प्रकाशक या एक अकादमी या एक संगठन की सज्जनता थी। उसने यानी महाकवि की आत्मा ने एक लम्बी जंभाई ली और गेट पर खड़े दरबान की मूंछों को देखा, फिर मंच पर बैठे दिग्गजों को देखा और उसे सेंचुरी के आइडिए पर हँसी आई और बाहर आ गया।

जब तक शरीर में था, मर्यादा में था। जब से आत्मा यानी आत्मरूप बना था, तब से सब कुछ से पूरी तरह मुक्त था। आत्मा होकर उसने जाना कि आत्मा को एक ही रस मिलता है : चिर हास्य रस! हँसते हुए आत्मा होकर उसने जाना कि जिस आत्मा या आत्मा की बात वह साहित्य में करता रहा है और सब करते रहे हैं और पता नहीं कब से करते रहे हैं, वे सबको बेवकूफ बनाते रहे हैं। वे भोक्ता हुए बिना ही हाँकते रहे हैं कि आत्मा ये है, वो है, ऐसी होती है, वैसी होती है। अरे असल मजा मरने के बाद ही आता है। अपने आप कोई मरता नहीं है। हे जीवात्मा, उसे मारने के लिए किसी रोग को कष्ट करना होता है। यह 'दिनकर' की आत्मा थी। जिसकी वही कहानी थी जो सबकी होती है। 'दिनकर' का शरीर 'दिनकर' की आत्मा को आजाद कर चुका था।

संयोग ही था कि 'दिनकर' की यही आत्मा जिस मंडी हाउस के त्रिवेणी में टहल रही थी, वहीं 'बच्चन' की आत्मा ब्रेड पकौड़ा दबा रही थी और 'अज्ञेय' की आत्मा दाढ़ी बनवाने वालों की लाइन में लगी थी। 'हजारीप्रसाद द्विवेदी' की आत्मा चौरसिया से पान बनवा रही थी। 'महादेवी' पास के नीम के पेड़ से उतरती गिलहरी पर संस्मरण प्लान कर रही थीं। 'निराला' की आत्मा 'रामविलास शर्मा' के इन्तजार में थी। 'रामविलास शर्मा' का ऑटो पहाड़गंज के जाम में फंसा था। 'मुक्तिबोध' की आत्मा को गणेश छाप बीड़ी को पब्लिक प्लेस में सुलगाने के चक्कर में पुलिस धर ले गई थी। 'अशोक वाजपेयी' 'शमशेर' की तबियत खराब होने के बावजूद उनकी जमानत कराने पैदल चल दिए थे और 'नामवर सिंह' 'अंधेरे में' की अस्मिता की खोज में 'मुक्तिबोध' की अधबुझी बीड़ी के टुर्रे को सम्भालकर अगले सेमिनार में दिखाने के लिए जेब में रखना चाह रहे थे।

उद्घाटनकर्ता बोला : हमने उन्हें समझा ही नहीं। उनकी किताब तो जिन्दगी का जिन्दा दस्तावेज है। हमने नहीं जाना, किसी ने नहीं जाना। इधर जब मैं पढ़ रहा था तो मालूम पड़ा उनकी इस कविता में हिमालय का 'यति' मौजूद है जिसे उन्होंने अवश्य देखा था, तभी तो सारी कविता 'यति' का आवाहन है। यह एकदम मौलिक चरित्र है जो कविता में आया है। आजतक 'यति' के बारे में किसी ने सोचा तक नहीं और 'दिनकर' पूरी कविता दे गए। हम सब 'दिनकर' के 'ऋणी' हैं और उनका ब्याज डकार गए हैं।

'निराला सेंचुरी' में कहा गया : 'निराला' की कविता में लोक नहीं लौकी है। वे लौकी पसन्द करते थे! रामदेव लौकी के रस से सारे रोग दूर करते हैं। उन्हें 'निराला' से प्रेरणा मिली है।

'हजारीप्रसाद सेंचुरी' में एक मात्र शिष्य ने स्थापना की कि पंडितजी कब कौन किसके हाथ का किस ब्रांड तम्बाकू का पान खाया करते थे और पान खाकर कब हँसा करते थे किस पर हँसा करते थे? वे सिर्फ हँसते रहते थे या कुछ और भी करते थे?

उनके हँसने से सामने वाले के कपड़े कब किसके खराब हुए? उनके विशद पान वर्णन में बनारस के दुकानदारों का कितना हिस्सा है? प्रमाण है कि उनके लिखने के बाद बनारस की पान इंडस्ट्री में बूम आया था। आज मंदी से लड़ने के लिए पंडुिजी और बनारस की पान मंडी के सहसम्बन्धों का पुनर्मूल्यांकन करना होगा। पान में बूम लाना है, पीक में लाना है।

'बच्चन सेंचुरी' में किसी ने जोर देकर कहा वे मधुशाला के नहीं पबशाला के एकमात्र कवि हैं। हिन्दी में पीते सब हैं, लेकिन पीने के बारे में कोई कहता नहीं है। उनकी कविता ने साहित्यकारों को पीने की तमीज सिखाई है। पब कल्चर उसी का विस्तार है। मुतालिक के विरोध में अगर किसी की कविता खड़ी है तो 'बच्चन' की कविता है। 'बच्चन' की कविता फासिज्म के विरोध में एक महान लम्बा गीत है। अगर मुतालिक से लड़ना है तो सब अपनी चड्डियों में लपेट कर मधुशाला की प्रतियाँ मुतालिक को भेजें।

बहुत सी जिन्दा-मुर्दा आत्माएँ हिन्दी में मंडी हाउस, आईआईसी में, हेबिटेट में सुबह से विराज जाती हैं। उन्हें उसी तरह अवदान खोजी परिंदे का इन्तजार रहता है जिस तरह 'निर्मल' की नायिका को रहता था और एकल 'लेडीज संगीत' करती रहती थी।

अभी-अभी 'निर्मल' की आत्मा पेरिस जाने के लिए टैक्सी में बैठी है कभी मिली तो उसकी खबर सुध देंगे।

तब तक ओम शांति: ओम शांति:।

—सुधीश पचौरी

'हिन्दुस्तान' से साभार

बापू जन्मशती

स्वर्ग के एक आँगन में बापू सूत कात रहे थे। उनकी काया कृश थी, किन्तु उनकी आँखों से जो ज्योति निकल रही थी, उससे स्वर्ग का कोना-कोना प्रकाशित हो रहा था। तभी स्वर्ग में ताज़ादम पहुँचे एक पत्रकार ने बापू से कहा—''अपनी जन्मशती देखने नहीं चलोगे, बापू?''

बापू के दुबले-पतले शरीर में हल्का सा स्पन्दन हुआ। उन्होंने पत्रकार की ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा—जैसे पूछ रहे हों—''क्या एक शताब्दी पूरी हो गई?''

पत्रकार ने दुबारा पूछा—''अपनी जन्मशताब्दी देखने नहीं चलोगे, बापू?''

बापू की आँखों में प्रसन्नता की चमक दिखाई देने लगी। जिस देश में जन्म लिया, जिसे अपनी कर्मभूमि बनाया और जहाँ राम का नाम लेकर भौतिक शरीर विसर्जित कर दिया, उस देश को देखने की लालसा होना स्वाभाविक ही था।

पत्रकार ने देखा, एक छाया खड़ी हो गई है और उसके साथ-साथ चलने लगी है।

उस छायारूपी बापू ने पत्रकार से पूछा—''पहले कहाँ चलेंगे, भाई?''

''जहाँ आप कहें। वैसे, पूरे भारतवर्ष में आपकी शताब्दी समान उत्साह से मनाई जा रही है। देखिये न, तमाम दीवारों पर आपके पोस्टर लगे हुए हैं। आपके सुभाषित लिखे हुए हैं।''

बापू अपने एक पोस्टर की ओर कौतूहलभरी दृष्टि से देखने लगे थे, तभी एक राह चलते युवक ने उनसे कहा—''लाटरी का टिकट खरीदेंगे?''

''कैसी लाटरी?'' बापू ने पत्रकार की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा।

''आपके नाम से लाटरी चल रही है। एक-एक रुपये का टिकट है। जिसका नम्बर आएगा उसे पाँच लाख का ईनाम मिलेगा।''

''और जिसकी लाटरी नहीं खुलेगी उसको क्या मिलेगा?'' बापू ने पूछा।

''उसे?'' उसे बापू का फोटो मिलेगा, पत्रकार ने हँसकर कहा—''देखते नहीं हैं, टिकट पर आपकी फोटो छपी है?''.....

बापू की शेष यात्रा व जन्मशती का विवरण जानने के लिए पढ़ें :

स्वर्ग का उल्लू

लेखक : ना० वि० सप्रे

मूल्य : रु० 100.00

प्राप्ति स्थान :

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

पोलैंड - हिन्दी और हिन्दी के छात्र

पोलैंड के तीन विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है। इनमें से दो विश्वविद्यालयों 'वार्सा विश्वविद्यालय', वार्सा और 'यागिलोनियन विश्वविद्यालय' क्राकूष में उच्च स्तर तक के हिन्दी पठन-पाठन की सुविधा है। इन विश्वविद्यालयों से न केवल बी०ए० और एम०ए० की डिग्रियाँ प्राप्त की जा सकती हैं वरन् पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने की सुविधा है। लेकिन पोज़नान स्थित 'आदम मिचकोविच विश्वविद्यालय' में छात्र एक विषय के रूप में तो हिन्दी पढ़ सकते हैं, पर इस विषय में स्वतन्त्र रूप से डिग्री नहीं हासिल कर सकते। वैसे तो इन तीनों विश्वविद्यालयों में सन् 1918-1919 से ही 'भारत विद्या विभाग' की उपस्थिति का पता चलता है, लेकिन पठन-पाठन की प्रक्रिया 1933 के आस-पास ही शुरू हो पायी।

'वार्सा' शहर जो पोलैंड की राजधानी है, यहाँ स्थित विश्वविद्यालय में प्रो० स्तानेस्लाव शायेर व कुछ अन्य विद्वानों के सहयोग से लगभग 1932-33 में ही भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, संस्कृत आदि की पढ़ाई प्रारम्भ कर दी थी। लेकिन जब 1935 में भारत से डॉ० हिरण्यमय घोषाल आए तो विषय के रूप में बंगला और हिन्दी पढ़ाई जाने लगी। परन्तु दुर्भाग्यवश 1936 में द्वितीय विश्वयुद्ध की वज़ह से जो गतिरोध पैदा हुआ तो लम्बे समय तक पूरी शिक्षण-व्यवस्था ही ठप्प हो गयी। सन् 1945 में युद्ध समाप्ति के बाद का दौर यहाँ के लोगों के लिए अत्यन्त मुश्किल भरा था।

दरअसल इस युद्ध के दौरान लगभग 90% वार्सा ध्वस्त हो गया था। शिक्षण-प्रक्रिया की शुरुआत अत्यन्त चुनौतीपूर्ण थी। न विश्वविद्यालय था, न पुस्तकालय और न पुस्तकें। अध्यापकों की संख्या भी बहुत कम थी। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुए अन्ततः 1953 में 'भारत विद्या विभाग' की नींव पड़ी और सन् 1955 में जाकर हिन्दी भाषा का शिक्षण सम्भव हो पाया। 1957 में डॉ० घोषाल भी भारत से पुनः वापस आ गये।

तबसे निर्बाध रूप से 'प्राच्य विद्या संस्थान' (इंस्टिट्यूट ऑफ ओरियण्टल स्टडीज़) के 'दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग' में न केवल हिन्दी वरन् संस्कृत, तमिल और बंगाली भाषाओं के उच्चस्तरीय अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया जारी है। इनके अतिरिक्त पहले पंजाबी भाषा भी पढ़ाई जाती थी लेकिन अब केवल उर्दू की कक्षाएँ चलती हैं जिसको छात्र हिन्दी के साथ-साथ पढ़ते हैं। भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, कला का इतिहास आदि की पढ़ाई तो सभी भाषाओं से सम्बद्ध विद्यार्थियों के लिए दो वर्ष तक अनिवार्य है। यहाँ विषय-चयन का तरीका अपनी तरह का है। यदि विद्यार्थी ने हिन्दी मुख्य (major) विषय के रूप में लिया है तो उसका सहविषय या गौण (minor) विषय संस्कृत होगा। यदि संस्कृत मुख्य विषय है तो बंगला भाषा और यदि तमिल मुख्य विषय है तो संस्कृत गौण विषय हो सकता है। हालांकि चयन में (गौण विषय) कोई बहुत बाध्यता नहीं है, यदि विद्यार्थी को पढ़ने में कोई विषय बहुत कठिन लग रहा है तो वे दूसरा विषय ले सकते हैं अपनी सुविधानुसार। कुल पाँच वर्ष का पाठ्यक्रम है, जिसको पूरा करने पर एम०ए० स्तर की डिग्री प्राप्त होती है। अपने अध्ययन-काल के अन्तिम वर्ष में छात्र लघु शोध प्रबन्ध (डिसर्टेशन) भी जमा करते हैं। वैसे तीन वर्ष तक पढ़कर बी०ए० की डिग्री देने का प्राविधान भी अब लागू है।

हमारे लिए यह अत्यन्त गर्व की बात है कि विश्वविख्यात संस्कृत के विद्वान और हिन्दी के प्रति गहरा लगाव रखने वोल प्रो० मारिया क्रिस्तोफ ब्रिस्की ने 1960 से 1966 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (वाराणसी) में रहकर संस्कृत नाट्य-साहित्य पर आधृत शोध उपाधि प्रो० अवधकिशोर नारायण के शोध-निर्देशन में प्राप्त की थी। लगभग इसी अवधि में अग्न्येष्का कोवाल्स्का सोनी भी भारत गयीं और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लम्बे समय तक रहकर स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में खासतौर पर नयी कविता पर काम किया। सन् 1966-67 के वर्ष थे, जब भारत से लौटने के बाद दोनों विद्वानों ने हिन्दी-शिक्षण को और मजबूत स्थिति में पहुँचाया। बाद में श्रीमती आग्नेष्का सोनी अपने परिवार सहित भारत गयीं और वहीं बस गयीं।

सम्प्रति 'वार्सा विश्वविद्यालय' के हिन्दी-विभाग को पूरे 'दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग' की अध्यक्षा प्रो० दानूता स्ताशिक ने काफी समृद्ध किया है। उनके शोध-निर्देशन में दो छात्राएँ ओला षिष्की और युस्तिना विश्निएव्स्का शोध-कार्यरत हैं। सन् 1955 से लेकर अभी तक लगभग 60-65 विद्यार्थियों ने स्नातकोत्तर स्तर की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। चार शोध-छात्र पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। बराबर यहाँ के विद्यार्थी भारत सरकार द्वारा दी गयी छात्रवृत्ति प्राप्त कर भारत जाते हैं।

मैं यहाँ हिन्दी के छात्रों से जब कभी प्रश्न करती हूँ कि वे हिन्दी पढ़कर क्या करेंगे? वे क्यों हिन्दी पढ़ रहे हैं? बहुधा उनके जवाब आश्चर्य में डालने वाले होते हैं। भारत के प्रति उनके गहरे लगाव को देखकर मैं दंग हो उठती हूँ।

प्रो० रामकली सराफ, वार्सा, पोलैंड
(प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

हिन्दी में वैश्विक सम्भावनाएँ

ज्यों-ज्यों दुनिया ग्लोबल हो रही है, हिन्दी की माँग भी बढ़ रही है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। हिन्दी में अनुवाद का काम चल रहा है। अब बड़े पैमाने पर अच्छे अनुवादकों की जरूरत आने वाली है। इसके लिए हिन्दी के विद्यार्थियों को अच्छी हिन्दी और उसी स्तर की अंग्रेजी भी आनी चाहिए। अमेरिका में स्नातक स्तर पर पढ़ाई के लिए कॉलेजों में एक नियम है, यदि कक्षा में दस प्रतिशत छात्र किसी एक भाषा समूह के हैं और यदि वे माँग करते हैं कि वे उस भाषा को पढ़ना चाहते हैं, तो कॉलेज प्रशासन को उन्हें वह विषय पढ़ाने की व्यवस्था करनी पड़ती है। हाल के वर्षों में अमेरिकी शहरों में हिन्दी-उर्दू पढ़ने की माँग बढ़ी है। अमेरिका में 20 लाख भारतवंशी रहते हैं। वे सब एक जैसी भाषा बोलते हैं—हिन्दुस्तानी। भारतवंशियों की दूसरी पीढ़ी अब हिन्दी-उर्दू के प्रति जागरूक हो रही है। वे इन भाषाओं को अपनी जड़ों से जुड़ने का जरिया मानते हैं। इसलिए वहाँ बड़ी तादाद में हिन्दी-उर्दू अध्यापकों की रिक्तियाँ निकल रही हैं। चूँकि हिन्दी और उर्दू में सिर्फ लिपि का फर्क है, इसलिए वे ऐसे अध्यापकों से काम चला लेना चाहते हैं, जिनका दोनों भाषाओं पर अधिकार हो।

मिनेसोटा से हिन्दी प्राध्यापक डॉ० विजय प्रकाश गौड़ ने बताया कि हिन्दी वालों को ये नौकरियाँ नहीं मिल पा रही हैं, क्योंकि उन्हें उर्दू लिपि का ज्ञान नहीं होता। वहीं उर्दू में एम०ए० किए हुए व्यक्तियों को आसानी से यह नौकरी मिल जाती है, क्योंकि वे उर्दू के साथ ही काम चलाऊ हिन्दी भी जानते हैं। यानी हिन्दी के साथ उर्दू या कोई और भारतीय भाषा आए तो अमेरिका में नौकरी पाना आसान हो जाता है। पहले भारत सरकार की भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद विभिन्न देशों में तीन साल के लिए हिन्दी प्राध्यापक चुनकर भेजती थी। वह अब भी भेज रही है, लेकिन अब अनेक देशों ने खुद भी नियुक्तियाँ शुरू कर दी हैं। जापान, कोरिया, सिंगापुर में अब सीधे हिन्दी प्राध्यापक भर्ती हो रहे हैं। जिन-जिन देशों में हिन्दी भाषी लोगों की संख्या अधिक है, वहाँ स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। खाड़ी देशों के अलावा, यूरोप-अमेरिका में भी हिन्दी शिक्षकों की माँग है। शर्त एक है कि हिन्दी के साथ ही उम्दा दर्जे की अंग्रेजी भी आती हो। डॉ० गौड़ बताते हैं, वह सिएटल में नौकरी के सिलसिले में इंटरव्यू देने एक अनुवाद ब्यूरो गए, जहाँ दुनिया की विभिन्न भाषाओं के लगभग 1800 अनुवादक काम कर रहे थे। उनके पास दुनियाभर से ऐसे लोगों की सूची थी, जो बढ़िया अनुवाद कर सकते थे। ऐसे अनेक लेखक हैं, जो अपनी बात भारत की विशाल आबादी तक पहुँचाना चाहते हैं। इसलिए हिन्दी वाले यह न समझें कि उनके लिए रास्ते सीमित हैं। आज पूरी दुनिया में उनकी माँग है, बशर्ते वे हिन्दी के साथ कुछ और भाषाएँ भी जानते हों।

श्रद्धांजलि/संस्मरण

आपकी पत्रिका के जनवरी 09 अंक में डॉ० रामचन्द्र तिवारी के देहान्त का दुखद समाचार पढ़कर आहत हुआ। एक और ज्योति लुप्त हो गई। गोरखपुर में हमारी पीढ़ी के वे कदाचित् अन्तिम व्यक्ति थे। अनथक परिश्रमी, स्वाध्यायी, सुचिन्तक थे। मध्यकालीन भक्ति साहित्य, हिन्दी गद्य-साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में उनकी मूल्यवान देन का सदैव आदर किया जायेगा। गोरखपुर उनकी उपस्थिति से गौरवान्वित हुआ था, उनकी अनुपस्थिति सालती रहेगी। गोरखपुर उनका कर्मस्थल था, जन्म स्थल नहीं। पर वे गोरखपुर के नाम से और गोरखपुर उनके नाम से ही पहचाना जायगा। अभी हम विद्यानिवास मिश्र को खोकर उनके अभावजन्य कष्ट से उबरे नहीं थे कि यह दूसरा आघात लगा। उधर जयपुर में एक और ज्योति-स्तम्भ गिर कर टूट गया। डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के अस्त हो जाने से हमने एक प्रखर रचनाकार और आलोचक को खो दिया। प्रभु हमारे इन सभी साथियों की आत्मा को शान्ति और उनके परिजनों को धैर्य प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रो० रामचन्द्र तिवारी हिन्दी के उन विशिष्ट रचनाकारों में थे, जिन्होंने जीवनपर्यंत न हार मानी, न थके। अन्तिम समय तक वे साहित्य-सर्जन में जुटे थे। वे आदर्श अध्यापक थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। छात्रों के प्रिय गुरु थे। सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी उनकी व्यस्तता में कमी नहीं थी। सेवा से अवकाश लेने के बाद भी लेखन से अवकाश नहीं लिया था। वे व्यर्थ के विवादों में नहीं पड़े। निरन्तर पठन-पाठन उनकी दिनचर्या का अंग था। साम्प्रदायिकता एवं धार्मिक संकीर्णता से वे सर्वथा मुक्त थे। ऐसे कर्मठ रचनाकार को 'वर्तमान साहित्य' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।**—डॉ० कुँवरपाल सिंह**

स्मृति वरुणा की कछार से

आचार्य रामचन्द्र तिवारी के वे शब्द अब कभी नहीं सुनाई पड़ेंगे जो देखते ही कहने लगते थे—''क्या उदय प्रताप इस समय क्या कर रहे हो?'' जब तक गुरुवर भगवतीप्रसाद सिंह जीवित थे तब तक उनका पहला प्रश्न यही होता था कि डॉ० सिंह से मिले, कैसे हैं? उनके 'सरस्वती-सदन' पर पहुँचते ही उनका लेखकीय मुद्रा में बाहर आना और कहना कि, ''बैठो, बनारस से आ रहे हो पुरुषोत्तम मोदी जी कैसे हैं?'' फिर उनका गम्भीर मुख-मण्डल और आकाशोन्मुखी दृष्टि हम जैसे शिष्यों की बोलती बन्द कर देती थी। हिम्मत नहीं होती थी कि आगे की वार्त्ता का क्रम कैसे चलाया जाय। थोड़े ही समय बाद स्वयं पूछ बैठते थे, ''कोई काम है?'' प्रत्युत्तर में सर का हिलाना और उनका पूछना क्या है दोनों एक ही साथ घटित होता था। ''गुरु जी 'उत्तर आधुनिकता' क्या है?'' ''लिखोगे या सुनोगे''—मैंने कहा, ''लिखूँगा''। फिर क्या था चालीस-पचास मिनट तक आलोचक की मुद्रा में निरन्तर बोलते चले गये। उनके बोलने का मंतव्य यही था कि 'इतिहास का अन्त' वाली उद्घोषणा और विचारधारा के समापन वाली धारणा दोनों साहित्य में कम से कम भारतीय साहित्य में तो नहीं ही चलेंगी।

प्रो० तिवारी की शब्द साधना अक्षरातीत ब्रह्म में तल्लीन होकर आलोचक रामचन्द्र तिवारी का निर्माण करती थी। एक नहीं अनेक आलोचनात्मक कृतियों के सर्जक प्रो० तिवारी व्यवहारिक जगत में आलोचक की प्रवृत्ति से दूर रहने वाले एक घरेलू भारतीय मन के सनातनी हिन्दू थे। प्राय: देखा जाता है कि जो लोग आलोचक 'बनते' हैं या जिन्हें लोग आलोचक कहते हैं उनकी मुखमुद्रा या दैहिक भंगिमा कुछ छिद्रान्वेषी जैसी हो जाती है। पर तिवारी जी पढ़ाई-लिखाई के जीवन को अलग और जीवन जीने के जीवन को अलग रखकर चलने वाले आलोचक कम समीक्षक अधिक लगते हैं। आलोचना में फतवा संस्कृति से दूर रहते हुए तिवारी जी भारतीय मन के समीक्षक थे। यही कारण है कि तुलसीदास के राम उन्हें गुणों की खान लगते हैं और कबीर का समाज उन्हें हृदय से प्रिय लगता है तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की सांस्कृतिक धारा से आलोचना का पथ प्रशस्त करते हैं। जीवन में भी तिवारीजी जिन लोगों के साथ उठते-बैठते थे उन्हीं को अपना मानते थे। सम्भवत: यही कारण था कि अनेक दबावों को दरकिनार करते हुए वह गोरखनाथ मन्दिर से आजीवन जुड़े रहे। बहुत से प्रोफेसर विभाग के अध्यक्ष बनते ही विश्वयारी में पड़कर अपनी मौलिकता खोकर आकाश-बेलि बन जाते हैं। तिवारीजी ऐसे गुणा-गणित में कभी पड़े ही नहीं। निरन्तर लिखना-पढ़ना और आस्था के साथ अध्यापन करना उनका शगल था। मुझे स्मरण है कि तिवारीजी प्रोफेसर बनते-बनते अपनी उत्कृष्ट सर्जना कर चुके थे। आज यह भी दिखायी पड़ रहा है कि प्रोफेसर बनने तक लेखन के क्षेत्र में लोग अनचीन्हें ही रह जा रहे हैं। तिवारीजी कहा करते थे कि लिखने से सभी लोग निराला नहीं बन जाएँगे पर लिखने-पढ़ने का क्रम टूटना नहीं चाहिए।

मैं गत ग्यारह वर्षों से सारनाथ में रह रहा हूँ। तिवारीजी का गाँव कुकुढ़ा यहाँ से बहुत करीब है। मुझे जब भी पता चलता कि तिवारीजी गाँव आये हैं तो उनका दर्शन करने का मन अवश्य बनाता था। प्रो० भगवती प्रसाद सिंह के स्वर्गीय हो जाने पर तिवारीजी से मिलकर उस अभाव की पूर्ति हो जाती थी। उनके गाँव या बनारस आने की सूचना स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी से मिलती रहती थी। कुकुढ़ा नहीं तो मोदीजी के आवास 'गंगा-निवास' पर मिलता ही था। उनसे मिलते ही पढ़ने का मन बनता था और बात करने पर लेखक बनने का शौक। प्रति गर्मी में गाँव आना, बाल सखाओं से भेंट, गाँव का मकान और विद्यालय का भवन सबसे एक ही प्रतिध्वनि निकलती थी कि 'लरिकाई को प्रेम कहो भलि कैसे छूटे'। जन्म-भूमि के प्रति तिवारीजी की यह ललक उन्हें एक बड़ी परम्परा से सम्पृक्त करती थी। बाद में पता चला कि यह तो साहित्यकारों का जवार है। गंगा इस पार कुकुढ़ा और उस पार जीयनपुर (प्रो० नामवर सिंह) हिंगुलर (डॉ० मोती सिंह)।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से उनका सम्बन्ध कई दशकों पुराना था। मोदीजी गोरखपुर से आकर वाराणसी में जम गये और तिवारी जी वाराणसी से गोरखपुर आकर विद्वता के एक स्तम्भ बन गये। एक प्रकाशक और दूसरा सर्जक-रचनाकार। रचनाकार और प्रकाशक का सम्बन्ध शीतयुद्ध चालित होता है, पर इन दोनों की मित्रता में कहीं व्यवधान ही नहीं दिखायी पड़ता। व्यावसायिकता और सृजनात्मकता का यह अद्भुत संगम विरल ही प्राप्त होता है। इससे दोनों की हार्दिक निर्मलता का आँकलन किया जा सकता है। एक दूसरे को दोनों ने प्रकाशित किया। पहले ने दूसरे को कागज और पुस्तकों में तो दूसरे ने पहले को प्रकाशन की दुनिया में।

दुखद है कि अब तिवारी जी के बनारस आने की सूचना देने वाला भी नहीं। और हाँ अब तिवारी जी भी तो नहीं। लगता है कि दोनों की मित्रता लोक से परलोक तक पहुँच गयी। वे दोनों तो खूब बातें करते होंगे। पर हम जैसे लोग अब किससे बातें करेंगे! **—डॉ० उदयप्रताप सिंह,** वाराणसी

डॉ० रामचन्द्र तिवारी का महाप्रयाण वास्तव में हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में एक हृदय विदारक मर्मस्पर्शी घटना है जिसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि-भावांजलि अर्पित करते हुए उनके द्वारा स्थापित समर्पित जीवन मूल्यों की रची-बसी संस्कृति में उनकी स्मृति को प्रणाम करता हूँ।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय
शिवपुरी, अलीगढ़

डॉ० रामचन्द्र तिवारी की साहित्यिक यात्रा व साधना तथा सामाजिक आदि परिस्थितियों में उनका उत्साह देखकर निस्सन्देह साहित्य की क्षति हुई है, परन्तु उनके कार्य लोगों को प्रेरणा देते रहेंगे।

—मदनमोहन वर्मा, ग्वालियर

अत्र-तत्र-सर्वत्र

भूख लगी है तो चलो नेट पर

इंटरनेट संसार के विस्तार के साथ ही अब ऑनलाइन भोजन सेवा का बाजार भी बढ़ता जा रहा है। इस क्षेत्र में कमाई के बढ़ते अवसरों को देखते हुए नए-नए उद्यमी सामने आते जा रहे हैं। इसी का नतीजा है कि आज इस इंटरनेट की दुनिया में hungryzone.com, eveningflavors.com, webdhaba.com और menulog.com जैसी तमाम दुकानें खुल गई हैं। ये दुकानें यानी वेबसाइटें आप के घर तक भोजन पहुँचाने का आर्डर देने से लेकर घर बैठे शहर में तत्काल अच्छे रेस्त्रां की तलाश और वहाँ का मेनू चेक कर टेबल बुक करने से लेकर खाने पीने की चीजों की समीक्षा की सुविधाएँ दे रही हैं।

इन साइटों पर आप रेस्त्रां से मोल तोल और ताजा छूट की भी जानकारी ले सकते हैं। इन साइटों की माँग बढ़ रही है क्योंकि नए दौर की अर्थ-व्यवस्था में लोग देर से घर पहुँचने लगे हैं और उन्हें खुद खाने पीने की व्यवस्था करने का वक्त बहुत कम मिलता है। बेंगलुरू में hungryzone.com की सह संस्थापिका प्रियंका कहती हैं आज के समय में लोगों को घर लौटने में बहुत देर हो जाती है और रास्ते में वे किसी रेस्त्रां में जाकर अपने आर्डर के लिए लम्बा इन्तजार करने के मूड में नहीं होते। सुविधा के साथ-साथ इन साइटों के जरिए फैसला करने का आकर्षण इसलिए भी बढ़ रहा है क्योंकि इसमें लोगों को पूरी जानकारी के साथ रेस्त्रां से लेकर खाने की चीजों का चयन करने की सुविधा होती है। webdhaba.com के सह संस्थापक अजय मोहन कहते हैं फोन पर आर्डर देने की बजाय नेट बुकिंग इसलिए ज्यादा अच्छी समझी जा रही है क्योंकि इसमें आप को रेस्त्रां या भोजन पहुँचाने वाली इकाई के कर्मचारी से माथा-पच्ची नहीं करनी पड़ती।

दिनेशनंदिनी डालमिया चौक

प्रख्यात लेखिका एवं पद्मभूषण से अलंकृत दिनेशनंदिनी डालमिया के नाम पर नई दिल्ली में तिलक मार्ग वेस्ट पॉइंट का नामकरण दिनेशनंदिनी डालमिया चौक करते हुए मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा कि वह उनके प्रति एक श्रद्धांजलि है। उन्होंने हर मोर्चे पर अपनी सशक्त लेखनी से महिलाओं से जुड़े मसले उठाए और महिलाओं के साथ होते पक्षपात का विरोध किया। उन्होंने कवयित्री होने के साथ-साथ 35 उपन्यास भी लिखे जो महिलाओं पर केन्द्रित हैं।

दुर्लभ पांडुलिपियाँ देखनी हैं तो चिंतपूर्णी आइये

चिंतपूर्णी। दुर्लभ पांडुलिपियाँ देखने के शौकीन लोगों के लिए अच्छी खबर है। हिमाचल प्रदेश के चिंतपूर्णी मंदिर में दुर्लभ पांडुलिपियाँ सार्वजनिक रूप से रखी गई हैं। चिंतपूर्णी शायद देश का पहला ऐसा मन्दिर है, जहाँ प्राचीन व दुर्लभ पांडुलिपियाँ रखी गई हैं। ऊना जिले में स्थित मन्दिर में पाँच दर्जन से ज्यादा पांडुलिपियों को विशेष प्रकार की तकनीक द्वारा फ्रेम करके रखा गया है। इनमें श्री मार्कण्डेय पुराण, श्रीमद्भागवत गीता और रामायण विषयों से सम्बन्धित दुर्लभ दस्तावेज हैं। इन्हें पंजाब के किसी श्रद्धालु ने दान दिया था।

कार्यशील (व्यवहारोपयोगी - Functional) हिन्दी में कॅरियर

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और इसकी भाषाई समृद्धता के कारण इसे 'मासेस-लैंग्वेज' यानी जन-जन की भाषा भी कहा जाता है। हालाँकि इस विविधतापूर्ण देश में जहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, वहीं दूसरी ओर हिन्दी बोलने वालों की संख्या चालीस प्रतिशत से भी ज्यादा है। इन दिनों वैसे लोगों के लिए रोजगार की सम्भावनाएँ प्रबल होती जा रही हैं, जो न केवल हिन्दी, बल्कि अंग्रेजी भी अच्छी तरह बोल और समझ लेते हैं। सच तो यह है कि आज जो बायलिंग्वल हैं, उनके लिए रोजगार की कमी नहीं है। दरअसल, सूचना-प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटरीकरण और मीडिया के बढ़ते प्रभावों के कारण ही आज 'कार्यशील हिन्दी' के क्षेत्र में रोजगार के नए-नए द्वार खुल रहे हैं। जितनी मात्रा में आज इस क्षेत्र में कुशल पेशेवरों की माँग है, उतनी मात्रा में उनकी आपूर्ति नहीं हो पा रही है।

'कार्यशील हिन्दी' से क्या तात्पर्य है ?

'फंक्शनल हिन्दी' के शाब्दिक अर्थ की बात करें, तो अंग्रेजी शब्दकोष के अनुसार, इसका अर्थ है—Language for specific purpose। 'कार्यशील हिन्दी', हिन्दी का वह रूप है, जिसे किसी प्रयोजन विशेष या उद्देश्य से जोड़ कर देखा जाता है। दैनिक जीवन या रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े किसी भी क्षेत्र में हिन्दी के जिस रूप का प्रयोग हम करते हैं, वही 'कार्यशील हिन्दी' है।

सम्भावनाओं की दृष्टि से यह विषय कितना उपयोगी है ?

जहाँ एक ओर आज हिन्दी को स्थापित करने के लिए कई तरह के प्रयास, कार्यक्रम और हिन्दी दिवस सरीखे आयोजन होते रहते हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसे परिदृश्य में 'कार्यशील हिन्दी' अपनी उपयोगिता के कारण खुद-ब-खुद स्थापित हो रही है। दरअसल, जहाँ एक ओर, हम हिन्दी को पूरी तरह स्थापित कर पाने में असमर्थ हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आज 'कार्यशील हिन्दी' में छुपी सम्भावनाओं के कारण न केवल देश में, बल्कि विदेशों में भी छात्र इस भाषा को अपना रहे हैं। सच तो यही है कि 'कार्यशील हिन्दी' फ्रेंच, जर्मन, जापानी भाषा की तरह ही 'विदेशी भाषा' के रूप में भी धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही है।

किन-किन क्षेत्रों में कॅरियर की सम्भावनाएँ हैं ?

क्षेत्र-विशेष या कॅरियर की बात करें, तो आज जो क्षेत्र ज्यादा लोकप्रिय हो रहे हैं, वे हैं—मीडिया (न्यूजपेपर, मैग्जीन, रेडियो, टीवी), एडवरटाइजिंग, दुभाषिया, हिन्दी अनुवादक आदि। इनके अलावा, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार अलग-अलग विभागों में हिन्दी अनुवादक, सहायक, मैनेजर (कार्यालयीय भाषा) आदि की रिक्तियाँ (vacancies) भी समय-समय पर निकालती रहती हैं। अर्थात् सरकारी क्षेत्र तथा प्राइवेट क्षेत्र दोनों जगह भरपूर अवसर हैं।

भारत में इसकी पढ़ाई कहाँ-कहाँ हो रही है ?

'कार्यशील हिन्दी' की पढ़ाई देश के लगभग सभी प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में हो रही है। जैसे, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, लखनऊ, कानपुर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, इग्नू आदि।

क्या इस विषय में पूर्ण-कालिक और अल्प-कालिक दोनों तरह के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं ?

हाँ, इस विषय में पूर्ण-कालिक आधार पर और अल्पकालिक आधार पर, दोनों स्तर की पढ़ाई कर सकते हैं। कुछ संस्थान में आप इसे वैकल्पिक विषय के रूप में भी, तो कुछ ऐसे संस्थान भी हैं, जहाँ इसे आप मुख्य विषय के रूप में पढ़ सकते हैं। उदाहरणार्थ, दिल्ली विश्वविद्यालय में इस विषय में बीए स्तर की पढ़ाई होती है, तो एमए में इसे वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसी तरह, जेएनयू और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में आप इसमें एडवांस्ड-लेवल यानी एमफिल या, पीएचडी स्तर की पढ़ाई भी कर सकते हैं। वहीं, इग्नू, जामिया मिलिया, भारतीय विद्या भवन, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन आदि से आप किसी खास क्षेत्र में डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते हैं।

इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए कुछ खास योजनाओं के बारे में बताएँ।

कुछ खास नहीं, जिन्होंने दसवीं और बारहवीं तक हिन्दी पढ़ी है और जो व्याकरण का अच्छा ज्ञान रखते हैं, वे यह कोर्स कर सकते हैं। वैसे, जहाँ तक कॅरियर की बात है, तो यह बेहद जरूरी है कि आपकी अंग्रेजी भी अच्छी हो।

प्रो० श्रुति भातखण्डे संगीत संस्थान की कुलपति बनीं

राज्यपाल टी.वी. राजेस्वर ने प्रो० श्रुति सडोलकर को सम विश्वविद्यालय भातखण्डे संगीत संस्थान, लखनऊ का कुलपति नियुक्त किया है। वहीं राज्यपाल ने कानपुर मण्डलायुक्त दिनेश सिंह को अग्रिम आदेशों तक चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्य देखने के आदेश दिए हैं।

सम्मान-पुरस्कार

ऊषा प्रियंवदा सहित 16 को हिन्दी सेवी सम्मान

नई दिल्ली। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की हिन्दी सेवी सम्मान योजना के अन्तर्गत वर्ष 2007 के लिए राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने विभिन्न श्रेणियों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए 16 हिन्दी सेवी विद्वानों को सम्मानित किया। इसके अन्तर्गत एकल विजेता को एक लाख रुपये की राशि एवं संयुक्त विजेता को 50-50 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न तथा एक शाल प्रदान किया गया। 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' *हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी प्रशिक्षण* के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए **डॉ० एम० शेषन, प्रो० ए० अरविंदाक्षन** और **प्रो० जोहरा अफजल** को दिया गया। 'गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार' *हिन्दी पत्रकारिता एवं रचनात्मक साहित्य* के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए **आलोक मेहता** और संयुक्त रूप से **डॉ० अमरनाथ अमर** एवं **कमाल खान** को दिया गया। सम्मान समारोह में 'आत्माराम पुरस्कार' पाने वालों में *वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य और उपकरण विकास के क्षेत्र* में उल्लेखनीय कार्य के लिए **डॉ० दुर्गादत्त ओझा** और **डॉ० सुबोध महंती** को संयुक्त रूप से पुरस्कृत किया गया। **श्रीमती विनीता सिंघल** एवं **डॉ० मनोज पटैरिया** भी इसी श्रेणी में शामिल हैं। 'सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार' **प्रो० निर्मला जैन** और **प्रो० नंद किशोर नवल** को दिया गया। 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' *हिन्दी में खोज व अनुसंधान करने तथा यात्रा विवरण आदि के क्षेत्र* में उल्लेखनीय कार्य के लिए **डॉ० पूरन चंद्र जोशी** और भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी एवं लेखक **हरिराम मीणा** को दिया गया। डॉ० जोशी के अस्वस्थ होने से उनके बेटे हिमांशु जोशी ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। 'डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार' *विदेशी हिन्दी विद्वानों को विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र* में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया जाता है। यह पुरस्कार पोलैंड की वार्सा विश्वविद्यालय के हिन्दी की विभागाध्यक्ष **प्रो० दानूता स्ताशिक** को दिया गया। 'पद्मभूषण डॉ० मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार' से अमेरिका की **ऊषा प्रियंवदा** को सम्मानित किया गया।

विष्णु प्रभाकर सम्मानित

वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, गाँधीवादी चिन्तक और लेखक विष्णु प्रभाकर को 'शब्द साधक शिखर सम्मान' के लिए चुना गया है। जगदीश चन्द्र जोशी स्मृति साहित्य पुरस्कारों की शृंखला का यह पुरस्कार उन्हें 23 अगस्त को हिन्दी भवन में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार में 51 हजार रु० की राशि दी जाती है।

नरेन्द्र मोहन को सर्वश्रेष्ठ नाटककार सम्मान

'नटसम्राट' नाट्य महोत्सव के अवसर पर नयी दिल्ली के लिटिल थियेटर ग्रुप सभागार में आयोजित एक भव्य और गरिमापूर्ण सम्मान समारोह में प्रसिद्ध नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने **डॉ० नरेन्द्र मोहन** को सर्वश्रेष्ठ नाटककार सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर उनके सभी चर्चित नाटकों (कहै कबीर.....,सींगधारी, नो मैंस लैण्ड, कलन्दर, अभंगगाथा, मिस्टर जिन्ना, मंच अंधेरे में, हद हो गयी, यारो) को रेखांकित किया गया जो विभिन्न रंग-संस्थाओं और प्रसिद्ध निर्देशकों द्वारा दिल्ली में तथा देश के विभिन्न प्रदेशों में, हिन्दी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में (भारत रंग महोत्सव में भी), समय-समय पर मंचित किये जा चुके हैं।

इस समारोह में नरेन्द्र मोहन के साथ-साथ अन्य सम्मानित रंगकर्मी थे **लोकेन्द्र त्रिवेदी** (सर्वश्रेष्ठ निर्देशक), **बनवारी तनेजा** (सर्वश्रेष्ठ अभिनेता), **सुचित्रा गुप्ता** (बैक स्टेज, मेकअप), **मोहिनी माथुर** (लाइफ टाइम एचीवमैंट)। समारोह में 9 दिनों की अवधि में रंग जगत् के चर्चित नाट्य निर्देशकों द्वारा 13 नाटकों का सार्थक, सफल मंचन तथा पाँच प्लेटफार्म थियेटर प्रस्तुतियाँ एक यादगार अनुभव रहा।

कांशीराम की स्मृति में घोषित पुरस्कार रद

लखनऊ। स्व० कांशीराम की स्मृति में नामित छह पुरस्कारों के लिए उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान की ओर से किए गए साहित्यकारों के चयन को शासन ने निरस्त कर दिया है। पुरस्कारों के लिए साहित्यकारों का चयन अब मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित कमेटी करेगी।

संस्थान द्वारा चयनित साहित्यकारों के नामों से शासन सन्तुष्ट नहीं था। यह भी तय हुआ कि पुरस्कारों के चयन के लिए नए सिरे से साहित्यकारों से उनकी कृतियाँ विज्ञापन के माध्यम से प्राप्त की जाएँ। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता जाहिर की। संस्थान ने साढ़े दस लाख राशि के इन छह नए पुरस्कारों के लिए नामों की घोषणा 28 फरवरी 2008 को की थी। इसके मुताबिक 2.5 लाख राशि का मा० कांशीराम स्वाभिमान सम्मान पुरस्कार पंजाबी साहित्यकार जसवंत सिंह कंवल को तथा मराठी भाषा में साहित्य के लिए 2 लाख धनराशि का रमाबाई महिला साहित्य सम्मान पुरस्कार डॉ० विजया राजाध्यक्ष को दिया जाना था। इसके साथ ही डेढ़े-डेढ़ लाख धनराशि वाले हिन्दी भाषा के चार पुरस्कारों में तकनीकी एवं वैज्ञानिक लेखन के लिए डॉ० गुणाकर मुले को संत कबीर सम्मान पुरस्कार, मीडिया लेखन के लिए मधुसूदन आनन्द को संत रविदास सम्मान पुरस्कार, निबन्ध, डायरी, आलोचना, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा आदि के लिए बिशन टण्डन को संत नामदेव सम्मान पुरस्कार और अनुवाद कार्य के लिए अमर गोस्वामी को संत रामदास सम्मान पुरस्कार देने की घोषणा की गयी थी।

मिथिलेश्वर का उपन्यास 'सुरंग में सुबह' म०प्र० साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत

विगत दिनों म०प्र० साहित्य अकादेमी ने कथाकार मिथिलेश्वर के उपन्यास 'सुरंग में सुबह' को पच्चीस हजार रुपये के अखिल भारतीय पुरस्कार से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया।

'सुरंग में सुबह' मिथिलेश्वर का पाँचवाँ उपन्यास है। भारतीय लोकतन्त्र की पतनशीलता तथा उसकी बेहतरी के लिए जमीनी संघर्ष पर यह उपन्यास आधारित है। इस उपन्यास के साथ कहानी के लिए दिवंगत कथाकार सत्येन कुमार को, निबन्ध के लिए डॉ० पुष्पारानी गर्ग को, आलोचना के लिए डॉ० सन्तोष कुमार तिवारी को तथा कविता के लिए बलबीर सिंह करूण को भी अखिल भारतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

आलोक मेहता को शरद जोशी सम्मान

एडिटर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष और वरिष्ठ पत्रकार **आलोक मेहता** को मध्य प्रदेश सरकार का वर्ष 2007-08 के अन्तर्गत 'राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान' दिया जाएगा। यह सम्मान संस्मरण, ललित निबन्ध, रिपोर्ताज आदि विधाओं में महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए दिया जाता है। पुरस्कार स्वरूप श्री मेहता को एक लाख रुपए, श्रीफल, शॉल और प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा। मेहता को अब तक एक दर्जन से अधिक राष्ट्रीय सम्मान मिल चुके हैं। हाल ही में उन्हें केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान देने की घोषणा की।

नरेश मेहता स्मृति-वाङ्मय सम्मान

मध्य प्रदेश राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति द्वारा भोपाल में आयोजित छठी शरद व्याख्यान कला और नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि हमारी अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में योजना आयोग की जो असली भूमिका थी उसको उसने नहीं निभाया। फलस्वरूप देश के विकास की योजना प्रणाली के कारण विकास को लेकर कई विसंगतियाँ खड़ी हो गई हैं। इन्हीं विसंगतियों के कारण हमारी योजनाओं के पूरे लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाये। हमारे अर्थतन्त्र को वर्तमान हालातों में मजबूत बनाने के लिये इन विसंगतियों को अविलम्ब दूर किया जाना चाहिये। प्रारम्भ में भाषा एवं संस्कृति के प्रख्यात **डॉ० ब्रजबिहारी कुमार** को 31,000 रुपये की सम्मान राशि, शाल, श्रीफल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर श्री चतुर्वेदी द्वारा वर्ष 2008 के नरेश मेहता

स्मृति वाङ्मय सम्मान से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष प्रो० रमेश दवे ने की।

बाबू गुलाबराय सम्मान

बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान आगरा द्वारा बाबू गुलाबरायजी की 121 वीं जन्म-जयन्ती के अवसर पर नागरी प्रचारिणी सभा आगरा में पूर्व सांसद एवं प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० रत्नाकर पाण्डेय** को 'बाबू गुलाबराय सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 'धर्मपाल विद्यार्थी पुरस्कार' सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं कवि **प्रताप दीक्षित** व दिल्ली के साहित्यकार **जयन्ती प्रसाद मिश्र** को दिया गया। वहीं 'पद्मश्री गोपालदास नीरज फाउण्डेशन पुरस्कार' सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार **डॉ० प्रभावीर चौहान** को दिया गया। इन सभी सम्मानित व्यक्तियों को शॉल अर्पित कर एवं स्मृति-चिह्न, सम्मान-पत्र, श्रीफल व पाँच-पाँच हजार रुपये देकर सम्मानित किया गया।

जगन्नाथ तैलंग शास्त्री सम्मानित

वाराणसी, जंगमबाड़ी स्थित जंगमबाड़ी मठ में आयोजि जगद्गुरु विश्वाराध्य जयंती महोत्सव के अवसर पर विद्वान **पं० जगन्नाथ शास्त्री तैलंग** को जगद्गुरु विश्वाराध्य विश्वभारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें उत्तरीय व प्रशस्ति पत्र के अलावा 25001 रुपये भेंट किये गये। यह सम्मान मठ की ओर से दिया गया।

अमर्त्य सेन को सम्मानित करेगी कैंब्रिज यूनिवर्सिटी

लंदन। नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय अर्थशास्त्री **अमर्त्य सेन** को कैंब्रिज यूनिवर्सिटी डी०लिट् की मानद उपाधि देकर सम्मानित करेगी। कैंब्रिज ने सेन समेत 12 मशहूर हस्तियों को मानद उपाधियों से सम्मानित करने का फैसला किया है। प्रतिष्ठित संस्थान आगामी 12 जून को इन लोगों को सम्मानित करेगा। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र व दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर सेन ने 1998 से 2004 तक ट्रिनिटी कालेज में अध्यापन किया था। सम्मानित होने वाले लोगों में बिल गेट्स, मेलिंडा गेट्स, प्रिंस करीम अल-हुसैनी व पीटर मैक्सवेल डेविस आदि हैं।

लक्ष्मी नंदन बोरा को सरस्वती सम्मान

के०के० बिरला फाउण्डेशन द्वारा वर्ष 2008 का प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान विख्यात असमिया लेखक **श्री लक्ष्मी नंदन बोरा** को उनके उपन्यास 'कायाकल्प' हेतु दिये जाने की घोषणा की गई है। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित और असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ० बोरा का यह उपन्यास 2002 में प्रकाशित हुआ था। 'कायाकल्प' यौवन को फिर से हासिल करने के लिए वृद्धावस्था को जल्दी आने से रोकने तथा जीवन की प्रत्याशा बढ़ाने की कहानी है।

राजेश सिंह बसर को कबीर सम्मान

वरिष्ठ पत्रकार **राजेश सिंह बसर** को उनके गजह संग्रह 'एक ही चेहरा' के लिए कबीर सम्मान 2009 से सम्मानित किया गया। पूर्वांचल हिन्दी मंच ने इसी वर्ष यह सम्मान शुरू किया है। श्री बसर इस सम्मान से सम्मानित होने वाले पहले शायर हैं। गोरखपुर में आयोजित एक समारोह में हिन्दी आलोचना के शिखर पुरुष नामवर सिंह ने राजेश सिंह को यह सम्मान प्रदान किया। उन्हें 11 हजार रुपये नकद व प्रतीक चिह्न दिये गये।

नाट्य-लेखन के लिए मुद्राराक्षस को अकादमी पुरस्कार

संगीत नाटक अकादमी ने इस वर्ष के अकादमी पुरस्कार से रंगमंच के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार **मुद्राराक्षस** को नाट्य-लेखन के लिए पुरस्कृत करने की घोषणा की है।

संजीव ठाकुर को अखिल भारतीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

कवि कथाकार **संजीव कुमार ठाकुर** को उनकी प्रयोगधर्मी कृति 'अगली कई साँझ नहीं आया वह' के लिए अखिल भारतीय वैश्य गहोई समाज छत्तीसगढ़ द्वारा स्थापित प्रथम अखिल भारतीय मैथिलीशरण स्मृति सम्मान 2008 छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ० रमन सिंह द्वारा 5001 नगद, प्रशस्ति पत्र, शॉल व श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

पुष्पिता और अभिमन्यु अनत को 'शमशेर सम्मान'

विगत दिनों वर्ष 2008 का 'शमशेर सम्मान' कविता के लिए नीदरलैण्ड में रहनेवाली **डॉ० पुष्पिता** को और रचनात्मक गद्य के लिए मॉरीशस के प्रख्यात साहित्यकार **श्री अभिमन्यु अनत** को दिया जाएगा। हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कवि शमशेर बहादुर सिंह की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान इस बार ऐसे रचनाकारों को समर्पित किया गया है, जो भारत से बाहर हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। डॉ० पुष्पिता का जन्म कानपुर में हुआ और उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। अब तक उनकी कविता और गद्य की 10 पुस्तकें प्रकाशित हैं। श्री अभिमन्यु अनत का जन्म मॉरीशस में हुआ। उनकी अब तक 75 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

राजेन्द्र परदेसी को अकादमी अवार्ड

वरिष्ठ साहित्यकार एवं चित्रकार **राजेन्द्र परदेसी** को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए पंजाब कला साहित्य अकादमी की ओर से पंजाब सरकार के वरिष्ठ मंत्री श्री मनोरंजन कालिया ने अकादमी के सर्वोच्च सम्मान अकादमी अवार्ड से जालन्धर (पंजाब) में सम्मानित किया।

प्रतिष्ठित साहित्यकार और विद्वान सम्मानित

लखनऊ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान में 27 फरवरी को आयोजित सम्मान समारोह में लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों व विद्वानों को विभिन्न सम्मानों से सम्मानित किया गया।

'पाखी' पत्रिका सम्मान

नोएडा। हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'पाखी' तथा इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी द्वारा 'जे०सी० जोशी स्मृति साहित्य-सम्मान' हेतु पुस्तकें और रचनाएँ आमन्त्रित की गई हैं। शब्द-साधक सम्मान, राशि 21 हजार रुपए, वर्ष 2008 में प्रकाशित पुस्तक के लिए। 'जनप्रिय लेखक सम्मान', राशि 11 हजार रुपए, हर विधा पर, कहानी, कविता, आलोचना, उपन्यास, गीत और ग़ज़ल श्रेणी में एक सर्वप्रिय लेखक के लिए। वर्ष 2008 में प्रकाशित पुस्तक का नाम, लेखक और प्रकाशक के नाम सहित प्रेषित करें। 'शब्द-साधना युवा सम्मान', राशि 11 हजार रुपए। 35 वर्ष से कम उम्र के युवा रचनाकारों के लिए कहानी, कविता और आलोचना की विधा में अप्रकाशित रचनाओं के लिए। रचनाएँ 31 मार्च तक आमंत्रित हैं। रचनाओं का नॉमिनेशन ईमेल के द्वारा भी भेजा जा सकता है। रचना/नॉमिनेशन इत्यादि डाक से भेजते समय लिफाफे के बाएँ कोने पर 'जे०सी० जोशी स्मृति सम्मान हेतु' अवश्य लिखें।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

स्मृति-शेष

उपन्यासकार तैयब सालेह का निधन

सूडान के विख्यात उपन्यासकार **तैयब सालेह** का विगत दिनों लंदन में निधन हो गया। 1929 में जन्मे, ब्रिटेन में शिक्षा प्राप्त और जीवन का अधिकांश हिस्सा यूरोप में बिताने वाले सालेह बीसवीं शती के सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले अनुवादित अरबी उपन्यासकारों में शामिल हैं। सालेह को एक सूडानी के नजरिए से उपनिवेशवाद और यौन को समझने की कोशिश वाले उनके उपन्यास 'सीजन ऑफ माइग्रेशन टू द नॉर्थ' से बेहद ख्याति मिली थी। मिस्र के उपन्यासकार एजूद्दीन चौकरी फिशर के अनुसार सालेह ने बहुत कम उपन्यास लिखे, लेकिन उनके सभी उपन्यास अरब जगत के लिए मील का पत्थर हैं।

डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का निधन

विगत 23 अक्टूबर 2008 को **डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय** का निधन हो गया। वे हिन्दी के बड़े आलोचक थे। उन्होंने उपन्यास, आलोचना, गज़ल के साथ कई अच्छे शोध प्रबन्ध भी लिखे। जयपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् वे कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति हुए थे।

डॉ० सुमन राजे का निधन

डॉ० सुमन राजे (कानपुर) का निधन विगत 26 दिसम्बर 2008 को हो गया। वे 'चौथा सप्तक' (सं० अज्ञेय) की कवयित्री थीं और उन्होंने 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' भी लिखा था।

क्रान्तिकारी कवि ज्वालामुखी का निधन

विगत 14 दिसम्बर 2008 को क्रान्तिकारी कवि **ज्वालामुखी** का निधन हो गया।

'प्रेमचंद : कलम का मजदूर' के लेखक 'मदन गोपाल' नहीं रहे

विगत 16 दिसम्बर को **श्री मदन गोपाल**, जिन्होंने 'प्रेमचंद : कलम का मजदूर' और 'प्रेमचंद की आत्मकथा' जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी, का निधन हो गया।

कथाकार लवलीन का निधन

लगभग 50 वर्षीय कथाकार **लवलीन** जिन्होंने 'चक्रवात' जैसी कहानी लिखी थी, का निधन जयपुर के एक अस्पताल में विगत 4 जनवरी को हो गया। कहानीकार के अलावा लवलीन एक पत्रकार और सक्रिय नारीवादिनी भी थीं। रचनाएँ : 'स्वप्न ही रास्ता है' (उपन्यास), 'प्रेम से पिटाई' (विमर्श), 'नागर, सलिल कमीशन आया' (कहानी संग्रह)।

श्री शशिकांत रघुनाथ जोशी जी नहीं रहे

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के केन्द्रीय सचिव 73 वर्षीय **श्री शशिकांत रघुनाथ जोशी जी** का शुक्रवार, 2 जनवरी 2009 को पुणे में निधन हो गया। आपने पूरे 54 साल तक सभा की सेवा की। सन् 1987 से आज तक आप सभा के केन्द्रीय सचिव का महत्त्वपूर्ण कार्यभार पूरी क्षमता से सँभालते रहे। आप सभा की प्रचार पत्रिका 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा समाचार' के सम्पादक थे।

आपकी हिन्दी की सेवाओं के लिए महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा आपको 'अनन्त गोपाल शेवड़े प्रचारक पुरस्कार' से सन् 2004 में तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा सर्वोच्च समझे जानेवाले गंगाशरण सिंह पुरस्कार से वर्ष 2006-2007 में सम्मानित किया गया था।

प्रो० विशुद्धानंद पाठक का निधन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष **प्रो० विशुद्धानंद पाठक** का बुधवार, 18 फरवरी 2009 को सरसुन्दर लाल अस्पताल में निधन हो गया।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' की सूचनाओं से अक्सर हिन्दी क्षेत्र की जानकारी मिलती रहती है। प्रसादजी के अंतरंग सम्बन्ध पर आज कोई सोचने वाला बनारस में नहीं है। मोदीजी और विनोदशंकर व्यास की पुस्तकें उस कमी को पूरा करती हैं।

डॉ० बच्चन सिंह के बाद, एक दुखद समाचार आपने ही दिया कि 4 जनवरी 2009 को डॉ० रामचन्द्र तिवारी का निधन हो गया। वह 85 वर्ष तक लगातार विचार-विमर्श करते रहे। एक बार इलाहाबाद में उनसे दो दिन तक लम्बी बातचीत भी हुई थी। मेरे आग्रह पर 'सर्वनाम' के कबीर अंक में उन्होंने एक गम्भीर टिप्पणी भी भेजी थी। कई बार बेतियाहाता से उनके आत्मीय पत्र भी मिले थे। **—विष्णु चन्द्र शर्मा**, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी 2009 का अंक मिला। इस अंक में 'सिंहावलोकन साहित्य : 2008', संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित सर्वेक्षण है यद्यपि कुछेक विधाओं तक ही सीमित है। लिखावट का कलाकार, महात्मा गाँधी का लेख अब कोई छाप सकता है, भारतीय लेखक का कमाल, भारत की विरासत, हिटलर का पुस्तक प्रेम, दिनकर का तैल-चित्र संसद में आदि सूचनात्मक समीक्षाएँ वास्तव में साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान की प्रतीक हैं जिनसे हिन्दी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्धि, अभिवृद्धि और समृद्धि की सम्भावनाएँ की जा सकती हैं। सम्मान-पुरस्कार की घोषणा का प्रकाशन भी प्रेरणात्मक है तथा साहित्यकारों को साहित्य-सर्जना के लिए प्रोत्साहित भी करता है। स्मृति शेष में प्रोफेसर विजयपाल सिंह के निधन का समाचार पढ़कर हार्दिक वेदना हुई, जो डी०लिट्० के मेरे शोध-प्रबन्ध के परीक्षक भी रहे थे तथा भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर में उन्हीं के द्वारा डी०लिट्० की मेरी मौखिकी परीक्षा भी सम्पन्न हुई थी। ऐसे मनीषी साहित्यकार को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि...अस्तु।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय
शिवपुरी, अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' के जितने भी अंक प्राप्त हुए, वे सभी उत्साहवर्धक थे। ये 'भारतीय वाङ्मय' के अंक ही हैं जिनकी वजह से मुझे लगता है मैं दूर रहकर भी अपने देश, शहर और अपने लोगों के बीच हूँ।

—डॉ० रामकली सर्राफ, पोलैण्ड

'भारतीय वाङ्मय' फरवरी 09 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

विभिन्न प्रकार की साहित्यिक पुस्तकों की संक्षिप्त जानकारी जहाँ उन्हें देखने की ललक जगाती है, वहीं 'हरा भरा चाँद' पुस्तक का संक्षिप्त समीक्षा सारगर्भित है।

अत्र-तत्र सर्वत्र के अन्तर्गत दी गई जानकारी तथा सम्मान पुरस्कार विषयक वस्तुस्थिति ज्ञानवर्द्धक है। अंक की अन्य जानकारी भी ध्यान देने योग्य है। इस प्रकार अंक सभी दृष्टि से अच्छा बन पड़ा है। **—मदनमोहन वर्मा,** ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' लगातार उपलब्ध हो रही है, पत्रिका नि:सन्देह 'गागर में सागर' भर रही है।

हिन्दी प्रसार के सरोकारों से जुड़ी पत्रिका के प्रगति की हम कामना करते हैं, पत्रिका समय-समय पर हमें हिन्दी विकास की गाथा से परिचित करवाती रहती है। विद्यालय के पुस्तकालय में छात्रों तथा अध्यापकों द्वारा वाङ्मय का इन्तजार रहता है। **—हेमचन्द्र रियाल,** टिहरी गढ़वाल

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी 09 अंक प्राप्त हुआ। डॉ० रामचन्द्र तिवारी के निधन का समाचार पढ़कर अत्यन्त मर्माहत हुआ। सचमुच उनके निधन से साहित्य जगत में छायी नीरवता हमें वर्षों तक कचोटती रहेगी। प्रो० विजयपाल सिंह, मोती बी०ए०, राजेन्द्र अनुरागी, फैजी, रामाश्रय झा एवं विनोद मिश्र के निधन से भी साहित्य जगत को कुछ कम क्षति नहीं हुई है। साहित्य के इन दिवंगत मनीषियों को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। **—डॉ० हरेराम पाठक,**
डिगबोई, आसाम

मेरी पुस्तकें मेरी सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं, मेरी गौरवशाली मण्डली है जहाँ मैं प्रत्येक क्षण प्राचीन सन्तों और दार्शनिकों से वार्तालाप कर सकता हूँ। **—फ्लेचर**

संगोष्ठी/लोकार्पण

हीरक जयन्ती : प्रो० परमानंद श्रीवास्तव

सुप्रसिद्ध आलोचक, कवि प्रो० परमानंद श्रीवास्तव के 75वें जन्मदिन पर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में हीरक-जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० नामवर सिंह ने प्रोफेसर परमानंद श्रीवास्तव को शुभकामनायें देते हुए कहा कि ''वे एक मनीषी साहित्यकार की तरह राग-द्वेष से परे होकर जिस तरह से पद्य व आलोचना साहित्य की सेवा करते आ रहे हैं, वह शतायु तक चलता रहे।'' डॉ० केदारनाथ सिंह ने कहा कि प्रो० परमानंद ने जिस तरह से तमाम भटकाव वाले मोड़ पर पथ विमुख हुए बिना अहर्निश साहित्य सेवा की, वह कईयों के लिये ईर्ष्या का कारण हो सकता है। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रो० परमानंद की साहित्य के प्रति सक्रियता, कर्मठता व संलिप्तता को देखकर हर कोई नतमस्तक है। इस अवसर पर प्रो० परमानंद ने कहा कि साहित्य सृजन में उन्होंने सदा ही प्रो० नामवर सिंह को आदर्श प्रतिमान माना। उन्होंने कहा कि हमेशा प्रतिमान को तोड़कर ही नया प्रतिमान स्थापित किया जाता है। इसी क्रम में उन्होंने अपने जन्मदिन पर लोगों द्वारा दिये गये सम्मान के लिये आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित की। हीरक-जयन्ती समारोह में दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय एवं गोरखपुर के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं बुद्धिजीवी उपस्थित थे। समारोह में प्रो० परमानंद श्रीवास्तव पर लिखी गयी पुस्तक 'प्रतिमानों के पार' का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया।

लिखना है सबसे बड़ा : गोविन्द मिश्र

साहित्य अकादमी का छह दिवसीय उत्सव 'साहित्योत्सव' सम्पन्न हुआ। 16 से 21 फरवरी तक चले इस उत्सव के दौरान हिन्दी के गोविन्द मिश्र समेत भारतीय भाषाओं के 23 रचनाकारों को वर्ष 2008 के अकादमी पुरस्कार अर्पित किए गए। पुरस्कार अर्पण समारोह के अगले दिन 'लेखक सम्मिलन' में पुरस्कृत लेखकों ने अपनी कृतियों और अपने रचनात्मक अनुभवों पर प्रकाश डाला। श्री मिश्र ने इस अवसर पर अपने व्याख्यान में कहा, ''साहित्य-लेखन के संसार में सबसे बड़ी चीज है लिखना, लिखते चलना। उसके आगे वे चीजें कुछ नहीं हैं जो, हम कभी-कभी साहित्य लेखन के रास्ते, पाने की सोचने लगते हैं।'' 'समकालीन भारतीय कथा साहित्य का पक्ष' विषय पर अमिताव घोष ने 'संवत्सर व्याख्यान' दिया।

अकादमी द्वारा तुकाराम की चतुर्थ जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का विषय 'सबद-गायन : संत तुकाराम और भक्ति परम्परा' था। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 11 सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में देश के कोने-कोने से आए वक्ताओं ने अपने विचार रखे। इन सत्रों में 'तुकारम-पूर्व वारकरी परम्परा', 'मराठी में तुकाराम का अभिग्रहण', 'जाति के खिलाफ विद्रोह', 'भक्ति : एक सामाजिक समीक्षाकी ओर', 'विभिन्न सजगताएँ', 'जन-धर्म', 'सिनेमा का प्रतिनिधित्व : सिनेमा में भक्ति', 'भक्ति और सामाजिक आन्दोलन', 'भक्ति गायन', 'अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' और 'गीति-काव्य' विषयों पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

कवि सुकान्त भट्टाचार्य : हिन्दी में

कोलकाता स्थित भारतीय-भाषा-परिषद के सभागार में श्रीमती मीरा भट्टाचार्य (पत्नी माननीय मुख्यमंत्री) ने कवि सुकान्त भट्टाचार्य की हिन्दी कविता पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर लेखिका : मृदुला साव (पारेख), विचारक रतन शाह, जितेन्द्र जितांशु एवं शहर के कवि, साहित्यकारआदि प्रमुख जन उपस्थित थे।

इस अवसर पर एक चिर विद्रोही कवि सुकान्त एवं उनकी कविता पर एक सार-संक्षेप शरणबंधु जी ने किया जो वितरित किया गया। सांसद मो० सलीम ने सुकान्त की कविताओं के उद्धरण देते हुए कहा कि संक्षिप्त जीवन में ही कवि ने जीवन के उद्देश्य को समझते हुए आगाह किया था। उन्होंने कहा कि बंगला कवि का इस तरह हिन्दी जगत से परिचय होगा। भाषा जोड़ती भी है तथा तोड़ती भी है। बचपन में बंगला स्कूलों में सुकान्त कवि के पाठ से पढ़ाई शुरू होती है।

कथाकार-उपन्यासकार गौरापन्त शिवानी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर संगोष्ठी

लखनऊ। हिन्दी में अपार लोकप्रियता प्राप्त करने वाली प्रसिद्ध कथाकार-उपन्यासकार गौरा पन्त शिवानी अपने नगर में विगत 17 फरवरी को न केवल बड़े ही भावपूर्ण प्रसंगों के बीच याद की गईं बल्कि एक ऐसी प्रस्थान बिन्दु भी बनीं जिनसे साहित्य की कई बहसें गुजरती हैं। क्या रचना का मूल्यांकन यह देखकर किया जाय कि रचनाकार स्त्री है या पुरुष? क्या लेखिका ही स्त्री मन को समझ सकती है या क्या कोई साहित्य लोकप्रिय होने से कम महत्त्वपूर्ण हो जाता है?—जैसे कई पुराने मगर महत्त्वपूर्ण विवाद उनके सन्दर्भ में एक बार फिर जीवन्त हो उठे। वरिष्ठ आलोचक निर्मला जैन और 'हिन्दुस्तान' की प्रमुख सम्पादक, साहित्यकार मृणाल पाण्डे ने कहा कि रचनाकार को स्त्री और पुरुष के कठघरे में नहीं बाँधना चाहिए क्योंकि रचनाकार इसका बराबर अतिक्रमण करता है और इसी कारण मानव समाज के हर चरित्र को पूरी संवेदना से चित्रित करता है। डॉ० जैन ने यह भी कहा कि लोकप्रिय साहित्य को परिभाषित किए जाने की जरूरत है। यह अवसर था प्रसिद्ध कथाकार-उपन्यासकार गौरा पन्त शिवानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी का। हिन्दी-उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी ने चार दिवसीय आयोजन के अन्तिम दिन इसे आयोजित किया था। इस अवसर पर मृणाल पाण्डे को कमेटी की ओर से व्यंग्यकार के०पी० सक्सेना ने महादेवी वर्मा सम्मान के साथ स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। संगोष्ठी इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण थी कि इसमें शिवानी जी को करीब से जानने वाले रचनाकार और उनके प्रशंसक तो थे ही, शिवानीजी के साथ ही उनके समकालीन प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर की बेटी अचला नागर भी उपस्थित थीं। स्वाभाविक ही था कि शिवानी जी और नागर जी के आत्मीय सम्बन्ध भी संस्मरणों में उभरकर आए। संगोष्ठी में डॉ० जैन का कहना था कि शिवानी जी के मूल्यांकन में आलोचकों के सामने हमेशा उनकी लोकप्रियता सवाल बनकर खड़ी होती है। लेकिन उनकी लोकप्रियता सस्ती फुटपाथी साहित्य जैसी लोकप्रियता नहीं है। वास्तव में उनके सन्दर्भ में साहित्य की लोकप्रियता को पुनर्परिभाषित किए जाने की जरूरत है।

मृणाल पाण्डे ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर और नन्दलाल बसु द्वारा अपनी माँ शिवानी के बनाए गए चित्रों की चर्चा करते हुए कहा कि उनमें एक ऐसी ऊर्जा थी जो उन्हें महिलाओं के खाँचे में बैठने नहीं देती थी। उन्होंने कहा कि वास्तव में रचनाकार में स्त्री-पुरुष दोनों के गुण होते हैं। अगर ऐसा न होता तो अमृतलाल नागर स्त्री मन को इतने संवेदनशील ढंग से अपनी रचनाओं में चित्रित न कर पाते। वैसे भी हमारे यहाँ अर्धनारीश्वर की कल्पना की गई है। माँ के कई संस्मरण सुनाते हुए श्रीमती पाण्डे ने कहा कि मैंने उनसे ही जाना कि प्रतिभा उफनती नदी की तरह होती है और वह रास्ता बना लेती है। वे खाने की मेज पर लिख लेती थीं। उनकी लिखने की व्यवस्थित जगह नहीं होती थी। इसी कारण उनकी पाण्डुलिपियों पर मसाले के, दाल-चावल के निशान लगे होते।

वरिष्ठ व्यंग्यकार एवं फिल्मों के पटकथा-संवाद लेखक के०पी० सक्सेना ने कहा कि वे मेरे लेखन की समीक्षक थीं और मेरे स्तम्भों के बारे में बेबाक राय देती थीं। पटकथा-संवाद-लेखिका डॉ० अचला नागर ने कहा कि पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप में छपने वाले शिवानीजी के उपन्यासों का उसी प्रकार इन्तजार होता था जैसे आज टेलीविजन के धारावाहिकों का इन्तजार होता है। संगोष्ठी में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की सदस्य नसीम इक्तेदार अली ने कहा कि शिवानी जी को कहानी कहने और उसे पुरअसर बनाने का ढंग आता था।

शताब्दी समारोह

वाराणसी नगर की प्रतिष्ठित नाट्य संस्था श्री नागरी नाटक मण्डली ने अपनी स्थापना (वसंत पंचमी 1909) के सौ वर्ष पूरे कर लिये। आज सर्व साधन-सम्पन्न प्रेक्षागृह से युक्त यह संस्था भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रंग प्रेरणा के अनुरूप साहित्यिक रंगमंच की स्थापना के संकल्प के साथ आरम्भ हुई और अपनी सुदीर्घ साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की अवधि में संस्था ने अपने संकल्प को पूरा किया। हिन्दी-रंगमंच के क्षेत्र में यह अकेली संस्था है जिसने यह शताब्द-गौरव प्राप्त किया है। संस्था द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह कार्यक्रम में संस्था के संरक्षक वरिष्ठ सांस्कृतिक व्यक्तित्व डॉ० भानुशंकर मेहता का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। इसी क्रम में लेखक/निर्देशक डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय, नृत्य आचार्य श्री प्रेमचंद होम्बल, कलाकार डॉ० रतिशंकर त्रिपाठी, सुमन पाठक, पं० रमेशकृष्ण नागर, लक्ष्मण खन्ना आदि को भी सम्मानित किया गया। संस्था के अध्यक्ष डॉ० संजय मेहता ने अपने स्वागत-भाषण में संस्था के संकल्प को दुहराया। सचिव डॉ० अजीत सहगल के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ आरम्भ हुआ डॉ० राजेन्द्र उपाध्याय द्वारा लिखित/निर्देशित नाट्य-प्रयोग 'रक्त-निर्वाण'। संस्कृत-रंगमंच की तरह शैलीबद्ध यह हिन्दी नाट्य-रचना संस्था के शताब्द-गौरव के अनुरूप थी। इस नाट्य-प्रयोग के बाद राहुल मुखर्जी निर्देशित नृत्यनाटिका 'कृष्ण कथा' की प्रस्तुति के साथ स्थापना-दिवस कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सूफीवाद पर लिखी पुस्तक का विमोचन

असम हाइकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ भार्गव ने अजमेर के डूमाडा रोड स्थित बाबा बादामशाह आध्यात्मिक शोध संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ठ सदस्य रमेशचन्द शर्मा के शोध ग्रन्थ 'भारत के सूफी सन्त, अवैसिया सिलसिले के विशेष सन्दर्भ में' का विमोचन किया। विशिष्ट अतिथि गूदड़ी शाह बाबा पंचम डॉ० इनाम हसन ने कहा कि सूफीवाद सबसे समान व्यवहार तथा मानव मात्र के प्रति प्रेम की भावना रखना सिखाता है।

प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक

राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से 'प्रेमचंद और आज का मीडिया' पर आधारित एक व्याख्यान कवि-गद्यकार लीलाधर मंडलोई ने आयोजित किया। व्याख्यान में मंडलोई ने प्रेमचंद की विशेषताओं का उल्लेख किया—''प्रेमचंद अन्तर्राष्ट्रीय विषयों की अच्छी समझ रखते थे। पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्यवाद के छुपे एजेंडे का जमकर विरोध किया। उनकी प्रगतिशील सोच और दृष्टि आज भी प्रासंगिक है। आज की परिवर्तित स्थितियों में प्रेमचंद सरीखा लेखन नहीं हो पा रहा है। मीडिया भी आज सम्पादकों के नियन्त्रण में नहीं है।''

आठवां निराला पर्व सम्पन्न

हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा मनाए जा रहे आठवें निराला पर्व का समापन 'राम की शक्ति पूजा' पर सुश्री प्रिया वेंकटरमण के भरतनाट्यम की प्रस्तुति से हुआ। छह दिनों तक चले इस पर्व की शुरुआत प्रसिद्ध हिन्दी कवि श्री चन्द्रकांत देवताले की बेटी सुश्री अनुप्रिया देवताले के 'राम की शक्ति पूजा' पर वायलनि वादन से हुई थी। बीच के दिनों में निराला के निबन्धों, उपन्यासों, उनकी काव्य परम्परा और चिंतन पर पाँच महत्त्वपूर्ण गोष्ठियाँ हुईं जिसमें देश के जानेमाने कवियों, लेखकों और आलोचकों ने हिस्सा लिया जिनमें डॉ० दूधनाथ सिंह, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, श्री विष्णु खरे, प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो० कृष्णदत्त पालीवाल, नीलाभ, मंगलेश डबराल, विजयकुमार, बद्रीनारायण, डॉ० आशीष त्रिपाठी, डॉ० वागीश शुक्ल, डॉ० विजय बहादुर सिंह, प्रो० रामदेव शुक्ल, डॉ० बलराज पाण्डे, व्योमेश शुक्ल, अरुण प्रकाश, ज्ञानेन्द्रपति आदि प्रमुख रहे।

दिनकर के गद्य-साहित्य पर संगोष्ठी

साहित्यानुशीलन समिति, चेन्नई ने कविवर रामधारी सिंह दिनकर की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में द्वितीय संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें उनके गद्य-साहित्य की विभिन्न कृतियों पर निबन्ध पढ़े गये। दिनकर रचित 'संस्कृति के चार अध्याय' पर डॉ० एम० शेषन, डॉ० सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया और श्री नरपतमल मेहता ने, 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' ग्रन्थ पर डॉ० इंदरराज वैद्य ने, 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण' ग्रन्थ पर डॉ० के वैजयंती ने, 'साहित्यमुखी' ग्रन्थ पर डॉ० पी०सी० कोकिला ने, 'चिन्तन के आयाम' ग्रन्थ पर डॉ० विद्या शर्मा ने और 'हमारी सांस्कृतिक एकता' ग्रन्थ पर डॉ० एन० लक्ष्मी अय्यर ने अपने विश्लेषणात्मक निबन्ध प्रस्तुत किये। विद्वान् अनुशीलकों को गीता-दैनंदिनी की भेंट देकर सम्मानित किया गया।

पत्रकारिता दिवस का आयोजन

अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के तत्त्वावधान में पत्रकारिता दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार तथा गुर्जर राष्ट्रवीणा पत्रिका के सम्पादक आचार्य रघुनाथ भट्ट ने कहा कि पीड़ित, शोषित एवं दबे-कुचले लोगों की आवाज बुलन्द करना ही वास्तविक पत्रकार धर्म है। पत्रकारिता में निष्पक्षता एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मुख्य अतिथि 'गुजरात टाइम्स' के स्थानीय सम्पादक श्री रमेश तन्ना ने कहा कि पत्रकारिता में प्रतिभा के साथ प्रतिबद्धता जरूरी है।

महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय की संयोजक डॉ० मालती दुबे ने कहा कि मीडिया के कारण हम घर बैठे सभी घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर ले रहे हैं।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ० विनोद कुमार पाण्डेय ने बताया कि 29 जनवरी 1780 को कलकत्ता से देश का पहला समाचारपत्र 'बंगाल गजट' या 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' प्रकाशित हुआ था। इसीलिए 29 जनवरी को हम पत्रकारिता दिवस का आयोजन करते हैं।

काव्य संग्रह 'गीत-प्रगीत' लोकार्पित

शिक्षाविद एवं वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती कमला सक्सेना के द्वितीय कविता संग्रह 'गीत-प्रगीत' का हिन्दी भवन में सम्पन्न एक विशेष समारोह में साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक ने लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ विचारक कैलाशचन्द्र पन्त ने की। मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्त्वावधान में हुए इस कार्यक्रम में निराला सृजन पीठ के निदेशक प्रो० रामेश्वर मिश्र पंकज और हिन्दी लेखिका संघ की अध्यक्ष डॉ० राजश्री रावत ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया।

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी संग्रह

नई दिल्ली, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हिन्दी के यशस्वी पत्रकार पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी के जीवन और कृतित्व से सम्बन्धित ऐतिहासिक दस्तावेजों के संग्रह का उद्घाटन जामिया के उपकुलपति प्रो० मुशीरुल हसन द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ० विश्वाथ त्रिपाठी ने 'बनारसीदास चतुर्वेदी और उनका दौर' विषयक व्याख्यान देते हुए उन्हें एक संत-लेखक बताया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं निस्वार्थ देशभक्ति की भावना के अनेक प्रसंग सुनाए।

'हाशिए के समाज का इतिहास'

एशियाई इतिहासकारों की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद का बीसवां सम्मेलन जवाहर लाल विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। इसका आयोजन विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन सेंटर फॉर एजुकेशनल स्टडीज के द्वारा किया गया।

इस सम्मेलन में एशिया के इतिहास लेखन के विविध आयामों पर विमर्श हुआ, जिनमें से कुछ हैं—एशिया का इतिहास लेखन, राष्ट्रनिर्माण, साहित्य और कला, हाशिये के समुदाय, जेंडर विमर्श, संस्कृति, लोक संस्कृति, लोकप्रिय संस्कृति, धर्म का उभार और आधुनिकता की चुनौतियाँ, संक्रमण काल का राजनीतिक अर्थशास्त्र, विस्थापन और मजदूर आन्दोलन, शिक्षा, विज्ञान, पर्यावरण, कृषि, किसान आन्दोलन, जनस्वास्थ्य आदि।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र इतिहासकार **रोमिला थापर** ने अतीत की ऐतिहासिक परम्पराओं पर विचार रखते हुए इतिहास की मुख्य धारा में सामाजिक इतिहास के महत्त्व को रेखांकित किया। **प्रो० सब्यसाची भट्टाचार्य** ने कहा कि इतिहास में एशिया की धारणा अनूठी है। उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत **प्रो० दीपक कुमार** ने किया और **कपिला वात्स्यायन** एवं ज०ने०वि० के कुलपति **प्रो० बी०बी० भट्टाचार्य** ने भी सत्र को सम्बोधित किया।

इस सम्मेलन में देश-विदेश के लगभग साढ़े चार सौ इतिहासकारों और इतिहास के महत्त्व से जुड़े लेखकों ने भाग लिया।

सम्मेलन में दो दिन प्लेनरी व्याख्यान भी हुए। पहले दिन पेरेडेनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका के प्रो०एमरीटस **लिजले गुणवर्दन** ने विज्ञान, तकनीक और इतिहास विषय पर व्याख्यान दिया। ज०ने०वि० के चांसलर **प्रो० यशपाल** ने इस सत्र की अध्यक्षता की। दूसरा व्याख्यान **डॉ० रामचन्द्र गुहा** ने 'जीवनियाँ और इतिहास' विषय पर दिया। **प्रो० हरी वासुदेवन** ने इस सत्र की अध्यक्षता की। समापन समारोह में **प्रो० हरबंस मुखिया** और **प्रो० माईकल एडास** ने व्याख्यान दिए। **प्रो० विपिन चंद्रा** इस समारोह के अध्यक्ष थे।

7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव आयोजित

26 दिसम्बर, 08 को इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में भारत सरकार के गृह राज्य मन्त्री डॉ० शकील अहमद ने अक्षरम् द्वारा आयोजित 7वें अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव का उद्घाटन किया। डॉ० शकील अहमद ने कहा कि हिन्दी को लेकर भारतीय मध्यवर्ग हीनभावना से ग्रस्त है। उसकी यह मानसिकता बदलनी होगी। उत्सव की प्रस्तावना में श्री अनिल जोशी ने कहा कि आज हिन्दी की एक वैश्विक पहचान बन चुकी है। श्री चैतन्य प्रकाश ने कहा कि हिन्दी आज प्रौद्योगिकी और बाजार की भाषा हो गई है।

अमेरिका से आई श्रीमती सुषमा बेदी ने कहा कि हमने न्यूजर्सी और टेक्सास में स्कूलों में हिन्दी शुरू की है, ताकि नई पीढ़ी बचपन से ही हिन्दी से जुड़ सके और हिन्दी मात्र व्यावहारिक उपयोग की नहीं बल्कि सम्वेदनाओं और साहित्य की भाषा बने। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ० रत्नाकर पाण्डे ने कहा कि सरकार के स्तर पर हिन्दी की अनेक संस्थाएँ शुरू हुई हैं, पर उन्हें सार्थक रूप से गतिमान करने की आवश्यकता है।

इसी क्रम में 'हिन्दी साहित्य की युवा रचनाधर्मिता', 'हिन्दी अध्ययन और अनुसंधान' तथा 'प्रवासी साहित्य' में 'मीडिया की बदलती भाषा', 'भारतीय भाषाएँ और हिन्दी' और 'रामचरितमानस की प्रासंगिकता' पर अकादमिक चर्चा की गई। तत्पश्चात् 'अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिन्दी', 'हिन्दी और रोजगार' तथा 'हिन्दी ब्लॉगिंग' विषयों पर सत्र आयोजित किए गए। इस सत्र में श्री बालेंदु दधीच ने हिन्दी ब्लॉगिंग और इंटरनेट पत्रकारिता की उदीयमान प्रवृत्तियों और उसके भविष्य को रेखांकित किया।

दूसरे सत्र में 'राजभाषा हिन्दी', 'हिमालय एक सृजन प्रेरणा' और 'समकालीन विमर्श' पर चर्चा की गई।

उत्सव के अन्त में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। अध्यक्षता डॉ० कर्ण सिंह ने की। इस अवसर पर सर्वश्री देवेंद्र इस्सर, राजी सेठ, सादिक, बालेंदु दधीच, वी०रा० जगन्नाथन और विदेश के सर्वश्री वेदप्रकाश 'बटुक' (अमेरिका), जय वर्मा व तितिक्षा (ब्रिटेन), अलका धनपत (मॉरीशस), डॉ० स्नेह सक्सेना (त्रिनिडाड) व उषा ठाकुर (नेपाल) को सम्मानित किया गया। तदुपरान्त डॉ० कैलाश वाजपेयी की अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्री प्रवीण शुक्ल ने किया।

हिन्दी नव लेखक शिविर आयोजित

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली एवं विश्वभारती, शान्तिनिकेतन के संयुक्त तत्त्वावधान में आठ दिवसीय हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक शिविर का आयोजन किया गया। निदेशालय द्वारा आमन्त्रित डॉ० (श्रीमती) जे०एस० कुसुम गीता, प्रो० देवव्रत शर्मा एवं डॉ० शाहीना तबस्सुम, विश्वभारती द्वारा आमन्त्रित डॉ० मल्लिक राजकुमार ने मार्गदर्शक साहित्यकार एवं डॉ० मोहम्मद नसीम, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय सहायक अनुसंधान अधिकारी ने शिविर प्रभारी के रूप में भाग लिया।

असाधारण युग के साधारण दिन

नई दिल्ली। गाँधीजी की पौत्री द्वारा गाँधीजी के साथ बिताए, 14 वर्ष की स्मृति पर लिखी गई पुस्तक 'असाधारण युग के साधारण दिन' का विगत 7 फरवरी को विमोचन किया गया। इस पुस्तक में गाँधीजी की पौत्री तारा गाँधी भट्टाचार्य ने बापू के साथ बिताए 14 वर्ष की यादों को प्रस्तुत किया है। वे गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति की वाइस प्रेसीडेंट भी हैं।

तारा ने अपने उन दिनों को याद करते हुए कहा कि गाँधीजी के अन्तिम 14 वर्ष मेरे शुरुआती 14 वर्ष थे। वे दिन असाधाराण होते हुए भी मेरे लिए साधारण दिन थे। एक बच्चा जिस तरह से अपने दादाजी को समझता है मैं भी उन्हें वैसा ही समझती हूँ। तारा ने बताया कि अपनी पुस्तक के जरिए अपनी उन चौदह वर्ष की यादों का विस्तार दिया है जो मेरे बाल किशोर मानस पर प्रभाव डालने के साथ दिल्ली में किंग्सवे कैम्प स्थित हरिजन आश्रम, बारदोली स्थित सेवाग्राम, पुणे स्थित आगा खाँ पैलेस, शिमला के बाल्मिकी आश्रम और बिड़ला हाउस की थीं।

अंग्रेजी डांस और बापू

लंदन में गोलमेज कांफ्रेंस में गाँधीजी भाग लेने गए हुए थे। कांफ्रेंस के पश्चात गाँधीजी के लिए हल्के-फुल्के मनोरंजन हेतु अंग्रेजी नाच का भी एक कार्यक्रम रखा गया था। शाम को कार्यक्रम के दौरान उनके एक साथी ने मजाक करते हुए कहा ''गाँधीजी आप भी अपना कोई साथी चुन लीजिए।''

गाँधीजी ने तुरन्त नहले पर दहला मारते हुए अपनी लाठी की ओर संकेत करते हुए कहा, ''यह रही मेरी साथिन, जो हरदम मेरे साथ रहती है।'' उनके जवाब पर अंग्रेज लोग भी हँसे बिना न रह सके।

लो, मुझे गोली से उड़ा दो

ब्रिटिश सरकार के नित-नए दमन चक्रों के विरोध-स्वरूप गाँधीजी नए-नए आंदोलन करते रहते थे। इन आंदोलनों को लेकर परेशान हो रहे एक अंग्रेज अधिकारी ने एक दिन कह दिया, ''हमें परेशानी में डाले रखने वाला गाँधी यदि मुझे कहीं मिल जाए तो मैं उसे गोली से उड़ा दूँ।''

गाँधीजी यह सुनकर चुप नहीं रहे। सीधे उस अंग्रेज अधिकारी के बंगले पर जा पहुँचे और उसके सामने जाकर बोले, ''आप मुझे मारना चाहते हैं न। मैं अकेला ही आ गया हूँ ताकि आपको मेरे समर्थकों का रोष ना झेलना पड़े। अब आप अपना काम कर सकते हैं।'' गाँधीजी की निर्भीकता के सामने वह अंग्रेज अधिकारी शर्मिंदा होकर रह गया।

'वहाँ' भी मेरे साथ चलिएगा

गाँधीजी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण उनके पीछे पत्रकारों का जमावड़ा लगा रहता था। हर समय, हर जगह पत्रकार उन पर सवालों की बौछार करते रहते थे। एक दिन एक पत्रकार ने उनसे मजाक में पूछा— ''बापूजी, आप इतने लोकप्रिय हैं, इतने सहृदय हैं, आप तो अवश्य ही स्वर्ग में जाएँगे?''

बापू निश्छल मुस्कान बिखेरते हुए बोले, ''भाई, स्वर्ग-नरक तो मैं नहीं जानता। पर इतना अवश्य जानता हूँ कि मैं जहाँ भी जाऊँगा, आप लोग मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे।''

बापू की हाजिर जवाबी ने उस पत्रकार की बोलती बंद कर दी।

पुस्तक समीक्षा

एक थी रुचि

बच्चन सिंह

प्रथम संस्करण : 2008 ई०

पृष्ठ : 152

सजिल्द : रु० 150.00

ISBN: 978-81-89498-34-4

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

देह और रिश्तों की बात करती एक अच्छी कृति

मधुकर और रुचि के रिश्तों के बीच का एक ऐसा उपन्यास है—'एक थी रुचि' जिसमें सम्बन्धों की पवित्रता को कायम रखते हुए देह हार जाती है। मगर सम्बन्ध नहीं हारते। मधुकर और उनकी पत्नी रुचि एक दूसरे से अलग होने के बावजूद एक दूसरे से जुड़े होते हैं। जबकि जहाँ मधुकर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के धनी होते हैं वही रुचि स्वच्छंदता की प्रतीक। मगर विपरीत धाराओं के बावजूद दोनों के बीच का रिश्ता अंत तक एक दूसरे को अपना बनाये रहता है। यही लेखक के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता इस उपन्यास में जहाँ उभर कर सामने आती है, वहीं सामाजिक बदलाव, विकृत राजनीति, ग्राम्य जीवन के बिम्ब बड़ी मजबूती के साथ अपनी पहचान बनाते उपन्यास को बहुमुखी बनाते हैं। स्त्री विमर्श के सार्थक प्रयोग के साथ उपन्यास विविध बिन्दुओं को चोट करने में भी सफल होता है।

उपन्यास के लेखक 'बच्चन सिंह' अपनी भाषा, अपने प्रयोग और अपने शिल्प की ताजगी से उपन्यास को यथार्थ की सीमा में रखते हुए जो खूबसूरती प्रदान करते हैं उसमें विशेष बात यह है कि कोई भी पाठक उससे चिपके बिना नहीं रहता है। कारण उसे वह सब कुछ शालीन अन्दाज में सात्विक ढंग से बिना किसी तामझाम के सहज ढंग से मिल जाता है, जिसके लिये वह कभी-कभी अजंता और खजुराहो का दर्शन करने के लिये विह्वल हो जाता है। गर्म किताबें और मैगजीनों के नकारात्मक चेहरों को खुद का मुँह ढंककर देखने और पढ़ने की कोशिश करता है। इसका मतलब यह नहीं कि यह उपन्यास कहीं से भी किसी भी तरह का अश्लील है। सच कहा जाये तो अश्लीलता को भी एक संस्कार देने में सफल कृति का नाम ही है—'एक थी रुचि'।

रुचि पति मधुकर को परमेश्वर मानती है लेकिन उसकी छाया में घुट-घुटकर जीना नहीं चाहती है। उसके उत्पीड़क वर्चस्व के खिलाफ खड़ी होकर अपनी मंजिल को तय करने की कोशिश करती है और वह सबकुछ जो पति द्वारा नहीं मिल पाता है वैकल्पिक ढंग से हासिल कर फिर उसकी बगल में आ जाती है लेकिन जो कुछ करती है पति को अंधेरे में रखकर नहीं करती है। अपितु उसे अवगत कराकर करती है कि तुम्हारी कमजोरी के चलते वैसा करना कराना उसकी मजबूरी है। सबकुछ के बावजूद वह रिश्तों के साथ बेवफाई नहीं करती है। उसका मानना है कि रिश्तों से देह की भूख को शान्त नहीं किया जा सकता है और न ही देह से रिश्ते बनाये जा सकते हैं। पति पत्नी के बीच एक रिश्ता होता है। उस रिश्ते के साथ जब देह जुड़ जाती है तो वह रिश्ता और मजबूत रिश्ता हो जाता है। किन्तु यदि यह रिश्ता देह को एकदम अपने से अलग कर देता है तो रिश्ते का कोई मतलब नहीं रह जाता है। इस उपन्यास में रुचि मधुकर से कुछ दिनों के लिये देह से अलग भले ही होती है किन्तु रिश्तों से जुड़ी होती है। मधुकर भी अपनी यादों में उसे जीते हैं। यही कारण है जबकि रिश्ते तोड़कर मधुकर और रुचि एक दूसरे से अलग होने की कोशिश करते हैं तो दोनों में अद्‌भुत बदलाव हो जाता है। मधुकर के भीतर का मधुकर शहीद हो जाता है और उसकी उदारता के समक्ष रुचि पानी-पानी हो जाती है। 'मुझे अफसोस है मधुकर कि इस घर में मेरी आखिरी रात है।' कहते हुए रुचि बैठ गयी। उसने मेरी ओर देखा फिर बोली—'वह वक्त गंवा चुके हो मधुकर, अब वक्त है एक दूसरे से बिछुड़ने का, जुदा होने का।' तुम्हें पाने के लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ रुचि, कुछ भी कर सकता हूँ। हमारे तुम्हारे रिश्ते में यह बच्चा दरार नहीं डाल सकता। कोई भी चीज हमारे तुम्हारे प्यार के बीच में बाधक नहीं बन सकती। मेरी पत्नी के पेट में जो बच्चा है, वह मेरा है सिर्फ मेरा। अर्थात् मधुकर को खुद का अपराध बोध ही वैसा करने को मजबूर करता है। रुचि का स्नेह, अपनापन और पत्नी के रूप में बीता क्षण इतना भारी होता है कि देह की भूल का उसके सामने कोई मतलब नहीं रह जाता है। खासकर इसलिये कि उसके लिये वह रुचि को उतना दोषी नहीं मानता है जितना कि अपने को मानता है। उसे बीते दिन याद आते हैं। जब रुचि कहती है कि पति-पत्नी के बीच सहवास एक अनिवार्यता है। मधुकर संवाद करते हैं कि क्या सहवास के बिना व्यक्ति का सारा जीवन निरर्थक हो जाता है। सुनो तुम रोमांस भी नहीं चाहते हो?

'कैसा रोमांस? मांस के लोथड़ों से खेलना—यही न है रोमांस। तुम्हारा मेरा जिस्म महज मांस का लोथड़ा नहीं है मधुकर। इसमें रक्त का प्रवाह है। संवेदना है। सेन्सेशन है और यह जानता है कि हमें कब और किस तरह रियेक्ट करना है। उसी में रोमांच का उत्स होता है और हम अन्ततः ब्रह्मानंद में स्वयं को डूबे हुए पाते हैं। एक अनिवर्चनीय आनन्द में।

मधुकर के किंचित रोमांस का सहयोग न मिल पाने की स्थिति में ही रुचि की स्वच्छंदता आगे बढ़ती है और इस स्थिति तक पहुँच जाती है कि वह उससे कहती है कि, 'मेरा ख्याल है मधुकर कि जब किसी स्त्री की देह पर मर्द का हाथ फिसलने लगता है तब वह कमजोर होती चली जाती है। वह पता नहीं कब मेरे जिस्म से खेलने लगा और मैं इतनी अशक्त होती गयी कि उसे खेलने दिया। एतराज करने की भी ताकत बची ही नहीं थी जिस्म में। जब तक चाहा खेलता रहा। एक समय ऐसा आया मधुकर कि वह जो कुछ चाहता कर सकता था। मैं शायद मना नहीं कर पाती। लेकिन वह बेवकूफ था कि मुझे ऐसे ही चुक जाने दिया। तुम मेरे पास इतना रिजर्व रहते तो मधुकर कि मैं एक पराये मर्द के सामने इस हद तक खुल गयी। तुमने मुझे ऐसा अवसर कभी दिया? नहीं दिया न?'

इस तरह हम देखते है कि रुचि मधुकर को भोगने के अनेक प्रयास करने के बाद सफल न होने की स्थिति में देह की माँग को पूरा करने के लिये ही कहीं भटकी। यह जानने के बाद कि मधुकर की उसमें रुचि भले हो सकती है किन्तु उसकी देह को भोगने में कोई रुचि नहीं है और यदि वह देह की भूख को तृप्त नहीं कर सकेगी तो उसके प्रति उसके द्वारा किया गया कार्य अन्याय होगा। सामाजिक बदलाव यानी माफिया संस्कृति की गंध उपन्यास में वर्तमान के यथार्थ की ओर ले जाती है। गंवई, गाँव को भी बड़ी बारीकी के साथ इस उपन्यास में जहाँ स्थान दिया गया है, वहीं गाँव के तमाम उन शब्दों को जीवंत करने की कोशिश हुई है जो आधुनिकता की गुंडई के तले आज दम तोड़ते वर्तमान में ओझल होते जा रहे हैं। समाज के वर्तमान को मधुकर जैसे साहित्यकार के बहाने पूरी तरह स्पष्ट किया गया है। शिल्प और शैली दोनों के धनी 'बच्चन सिंह' ने साहित्य की गहराई में उतरकर उन सारी बातों को इस उपन्यास में डालने का प्रयास किया है, जो एक अच्छे उपन्यास के लिये जरूरी होता है।

पुस्तक में गीत, लोकगीत और कवितायें भी अपनी बात करती अच्छी लगती हैं। वास्तव में 'बच्चन सिंह' कहानी, कविता, गीत, पत्रकारिता, सम्पादन, वैचारिकी, अध्यात्म की दर्जनों पुस्तकों के लेखक, प्रणेता वरिष्ठ पत्रकार है। उनका व्यक्तित्व प्रिंट मीडिया से लेकर इलेक्ट्रानिक मीडिया तक फैला बहुआयामी है। इसलिये उसकी छाप उपन्यास पर भी पड़ती नजर आती है। एक मुश्त यदि कहना हो तो कहने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये कि शालीन सेक्स की संस्कारिक पुस्तक का नाम है 'एक थी रुचि'। **—के० इन्द्रजीत**

आगामी प्रकाशन

मलिक मुहम्मद जायसी

कृत

'पदुमावति'

[एक नया पाठ और साहित्यिक व्याख्या]

संपादक : **डॉ० कन्हैया सिंह**

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी काव्य-परम्परा के सबसे प्राणवान महाकवि हैं और उनकी रचना 'पदुमावति' (अब तक 'पदमावत' नाम से संबोधित) भाव और विचार की एक ऐसी पूँजी है जो काव्य-कला के चरमोत्कर्ष के साथ ही भारत की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता की एक मिसाल है। इसी से जायसी को 'धरती पुत्र' और 'राष्ट्र का महान सपूत' कहा गया है। पर जायसी की इस महान कृति का पाठ विद्वानों के महत्त्वपूर्ण अनुसंधानों की महान उपलब्धियों के बाद भी कई सौ स्थलों पर संदिग्ध और विवादास्पद बना रहा। प्रस्तुत संपादन में उन सभी स्थलों के सही पाठ को ढूँढ़ निकाला गया है और रचना के गूढ़ अर्थ की सही साहित्यिक व्याख्या भी 'सोना में सोहागा' जैसी की गयी है।

संपादक डॉ० कन्हैया सिंह हिन्दी जगत् के एक ऐसे हस्ताक्षर हैं जो सूफ़ी काव्य और दर्शन के मर्मज्ञ तथा पाठालोचन की शास्त्रीय विधि के मान्य आचार्य हैं। उनकी इस योग्यता को डॉ० माता प्रसाद गुप्त, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त जैसे इस क्षेत्र के पण्डितों ने भी स्वीकार किया है। ऐसे सुयोग्य और अधिकारी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत यह नया पाठ और नयी साहित्यिक व्याख्या अवश्य ही हिन्दी साहित्य की एक महान उपलब्धि होगी।

डॉ० सिंह ने यह कार्य डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के कुशल निर्देशन में सम्पन्न किया था। उनके संग्रह की चार महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों के साथ डॉ० माता प्रसाद गुप्त संस्करण के पाठान्तरों तथा मनेर शरीफ आदि की प्रतियों से परिश्रमपूर्वक यह पाठ संपादित किया गया है तथा अवधी-भाषा के व्याकरण और उच्चारण-वैशिष्ट्य को भी इसमें प्रामाणिकता के आधार पर सुरक्षित किया है। जहाँ तक साहित्यिक व्याख्या का प्रश्न है, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के भाष्य की अनेक भूलों को इसमें सुधारा गया है। डॉ० अग्रवाल की व्याख्या इतिहास-संस्कृति के तत्त्वानुसंधान में बेजोड़ है, पर सूफी काव्य की बारीकियों और लोकभाषा के शब्दों और साहित्यिक अर्थों की पकड़ में जो अधूरापन था, उसे इस व्याख्या ने पूर्ण कर दिया है।

इस नये पाठ और अर्थ ने मलिक मुहम्मद जायसी के काव्यानुसंधान, उनके धर्म-दर्शन और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के सम्बन्ध में सर्वांगपूर्ण और संगत अनुशीलन और विमर्श का मार्ग प्रशस्त किया है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, सूफी काव्य के अध्येताओं और विद्यार्थियों के लिए यह कृति संग्रहणीय है।

संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र

लेखक

महामहोपाध्याय प्रो० अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र

संस्कृत काव्यशास्त्र के पूर्व लेखकों सर्वश्री पी०वी० काणे, एस०के० डे, जी०टी० देशपाण्डे, पं० बलदेव उपाध्याय आदि में प्राय: काव्यशास्त्र के विवेच्य विषय को लेकर पूर्ण एकरूपता है, विचारों एवं व्याख्यानों में भले ही अन्तर हो। उस दृष्टि से, प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक नवीनतायें हैं, जिन्हें यहाँ रेखांकित करना आवश्यक है।

प्रथम बिन्दु : यह काव्यशास्त्र वैदिक मन्त्रों से आज तक की संस्कृत कविता का नियमन, व्याख्यान एवं समीक्षा करता है। फलत: इसकी अभिव्यक्ति पूर्व काव्यशास्त्रों की तुलना में कहीं अधिक है। संस्कृत का काव्यशास्त्र का वैदिक उद्भव, पूर्वभरतयुगीन संस्कृत काव्यशास्त्र, भरतयुगीन काव्यशास्त्र, अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र के विवेच्य विषय, पण्डित राजोत्तर संस्कृत काव्यशास्त्र तथा स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत कविता (गीत, गज़ल एवं छन्दोमुक्त) की समीक्षा का मानदण्ड आदि सामग्री इस काव्यशास्त्र में इदम्प्रथमतया समाविष्ट की गई है।

द्वितीय बिन्दु : इस काव्यशास्त्र में काव्य प्रयोजन, काव्यहेतु, काव्य-लक्षण, काव्य-विभाजन, अभिधादि शब्द-शक्तियाँ, गुणालंकार, हीति-वृत्ति तथा काव्यात्मतत्त्व आदि समस्त सन्दर्भों में, भरत से पण्डितराज जगन्नाथ तक उपलब्ध मत-मतान्तरों की क्रमिक समीक्षा करने के बाद ही, उसकी वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया है। फलत: पाठक को ऐतिहासिक-समीक्षा का सुख मिलता है।

तृतीय बिन्दु : इस काव्यशास्त्र में श्रद्धा एवं कोरे तर्क के बीच का विवेकसम्मत मार्ग अपनाया गया है। अतिशय श्रद्धा दोष नहीं देखने देती तो कोरे तर्क गुणों तक नहीं पहुँचने देते। फलत: समीक्षा पक्षपातपूर्ण बन जाती है। परन्तु इस काव्यशास्त्र में दोनों ध्रुवों से मुक्त रहकर, मध्यम-मार्ग अपनाया गया है जो सत्य के प्रकाशन का है।

अर्थशास्त्र शिक्षण

लेखक

डॉ० कामता प्रसाद पाण्डेय

डॉ० जयप्रकाश श्रीवास्तव

21वीं सदी में आर्थिक परिवेश बड़ी तेजी से परिवर्तित हो रहा है। आज की तथाकथित मंदी जो पूरे वैश्विक सन्दर्भ को आन्दोलित करने जा रही है, हमारे भारतीय विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों में कार्यरत अर्थशास्त्र विषय के शिक्षकों से एक विशेष एवं अहम् भूमिका की अपेक्षा रखती है। इस परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियों में नवीनतम युक्तियों का अनुप्रयोग नितान्त अपरिहार्य बन गया है। यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उक्त क्रम में अर्थशास्त्र विषय की अध्येय विषय-वस्तु में नया स्वरूप एवं आयाम जोड़ने हेतु शिक्षकों एवं शिक्षाशास्त्र (पेडागॉजी) के विद्वानों को आवश्यक पहल करनी होगी जिससे इस विषय के सम्यक् शिक्षण द्वारा नवीन अन्तर्दृष्टि, सूझबूझ एवं प्रवीणताओं को विकसित करने में मदद मिल सके।

प्रस्तुत ग्रन्थ लेखक द्वारा पूर्व में प्रणीत प्रथम रचना के रूप में लोकप्रिय रहा है। इस नवीन एवं परिवर्धित संस्करण के अन्तर्गत विषय-वस्तु में परिवर्तित सन्दर्भों की अपेक्षानुसार नवीनता लायी गयी है जिससे शिक्षकों को इस विषय के प्रभावी शिक्षण की व्यवस्था गठित करने में उचित दिशा निर्देश प्राप्त हो सके। पूरी पुस्तक में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के साथ अध्यायों के संगठन एवं उनकी गुणवत्ता की दृष्टि से मूल रचना की प्रकृति यथावत् रखी गयी है जिससे पाठ्य-वस्तु एवं उभरते नूतन मुद्दों को वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता के साथ विश्लेषित किया जा सके।

आशा है, सुविज्ञ पाठक प्रस्तुत संस्करण से विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

शीघ्र प्रकाश्य

पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

- **गुप्त साम्राज्य** : डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त
- **प्राचीन भारत** : डॉ० राजबली पाण्डेय

सिंहावलोकन : साहित्य : 2008 (*गतांक से आगे*)

काव्य-क्षेत्र

यह एक सुखद आश्चर्य है कि अब फिर कविता में प्रबन्ध-धर्मा कविताओं की ओर रुझान बना है और कई खण्ड काव्य तथा लम्बी कविताएँ अन्य कविताओं की अपेक्षा अधिक गहराई और काव्यात्मक संवेदन से परिपूर्ण दिखाई दीं। 'आत्मजयी' के यशस्वी वरिष्ठ कवि कुंवर नारायण का खण्ड काव्य 'वाजश्रवा के बहाने' में नचिकेता और वाजश्रवा के मिथक को आधुनिक दृष्टि से गृहीत कर जीवन और मृत्यु के प्रश्नों से टकराता हुआ वर्तमान में भौतिक और आत्मिक के बीच चलते द्वंद्व को विश्लेषित करता है।

भगवत रावत का कविता-संग्रह 'अम्मा से बातें और कुछ लंबी कविताएँ' उनकी प्रतिनिधि कविताओं के संचयन के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस संग्रह में 'प्यारेलाल के लिए विदा गीत', 'अम्मा से बातें', 'सुनो हिरामन', 'अथ रूपकुमार कथा', 'कचरा बीनने वाली लड़कियाँ' तथा 'कहते हैं कि दिल्ली की है कुछ आबोहवा और' सशक्त कविताएँ हैं।

वरिष्ठ कवयित्री सुनीता जैन के छोटे-छोटे कई प्रभावी काव्य-संकलन इस वर्ष आए हैं, 'क्षमा', 'गांधर्व पर्व', 'कुरबक' तथा 'तरु तरु की डाल पर' , 'गांधर्व पर्व' और 'क्षमा' यद्यपि खण्ड काव्य के रूप में लिखे गए हैं किन्तु वे खण्ड काव्य की बनी-बनायी चौहद्दियों को तोड़ते हुए कथा पर इतना बल न देकर पात्रों के मनोभावों पर बल देते हैं, उनकी कथा को प्रथम बार वाणी देते हैं।

'कवि ने कहा' शृंखला में मंगलेश डबराल, उदय प्रकाश, लीलाधर जगूड़ी, लीलाधर मंडलोई, विष्णु नागर, विष्णु खरे, अनामिका आदि में उनकी प्रतिनिधि कविताएँ संकलित हैं। दिनेश कुशवाहा ने अपनी कविताओं से पिछले कुछ वर्षों में अपना सुनिश्चित स्थान बनाया है, उनका 'इसी काया में मोक्ष' संग्रह उनके कवि के प्रति पूर्ण आश्वस्ति देता है। भारतीय ज्ञानपीठ ने युवा कवियों के बहुत-से संग्रह निकालकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया—इस क्रम में सौमित्र का 'मित्र', हेमंत कुकरेती का 'कभी जल कभी जाल', जितेन्द्र श्रीवास्तव का 'असुंदर सुंदर', अमित कल्पना का 'होने न होने से परे' आदि।

वस्तुत: इतने सारे समर्थ कवियों की नयी पीढ़ी समकालीन हिन्दी कविता के समृद्ध भविष्य के आगमन की आशाप्रद सूचना देती है।

नाट्य क्षेत्र

कम ही नाटक हिन्दी में प्रकाशित होते हैं, यह वर्ष भी इसका अपवाद नहीं है। फिर भी जिन नाटकों का उल्लेख किया जाता है उनमें अर्जित पुस्तक का 'जन विजय' प्रमुख है। यह बौद्धकालीन इतिहास के उस पृष्ठ से कथा उठाता है जिसमें वैशाली गणतन्त्र और मगध के साम्राज्य के संघर्ष का चित्रण है। वैशाली गणराज्य का चित्रण एक आदर्श राज्य परिकल्पना के रूप में किया गया है, वह व्यवस्था वर्तमान के लिए भी कुछ संकेत छोड़ती है। इसके अतिरिक्त नादिरा जहीर बब्बर की 'ऑपरेशन क्लाउड बर्स्ट', 'जी जैसी आपकी मर्जी', 'दयाशंकर की डायरी', 'रुकुबाई', 'सुमन और सना' नाट्य शृंखला, दयाप्रकाश सिन्हा का 'रक्त अभिषेक' तथा प्रताप सहगल के नौ लघु नाटकों का संग्रह 'कोई और रास्ता तथा अन्य लघु नाटक' भी चर्चा में हैं।

आत्मकथा

इधर हिन्दी में आत्मकथा लेखन की ओर रुझान बढ़ा है, विशेषत: महिला साहित्यकारों में। इस क्रम में मैत्रेयी पुष्पा की 'गुड़िया भीतर गुड़िया' आयी है जिसे 'कस्तूरी कुण्डल बसै' के बाद उनकी आत्मकथा का दूसरा खण्ड कहा जा सकता है। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' औपन्यासिक शिल्प में ढली आत्मकथा थी तो 'गुड़िया भीतर गुड़िया' सीधे-सीधे आत्मकथा है। किसी भी आत्मकथा की सबे बड़ी खूबी उसकी ईमानदारी और उस ईमानदारी में निजता को खोलना है। मैत्रेयी पुष्पा इस कसौटी पर खरी उतरी हैं। वरिष्ठ पीढ़ी की लेखिका चंद्रकिरण सौनरेक्सा की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' भी एक बहुत साफ-सुथरी कृति है। 1915-16 ई० में लिखित दु:खिनी बाला की आत्मकथा 'सरला : एक विधवा की आत्मजीवनी' का प्रज्ञा पाठक द्वारा सम्पादित संस्करण प्रकाशित हुआ है। आत्मकथा और जीवनी के निकट की विधा **संस्मरण** है। संस्मरण साहित्य में डॉ० भवदेव पाण्डेय की पुस्तक 'उग्र का परिशिष्ट' उनकी कतिपय असंकलित रचनाओं और पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र से सम्बन्धित संस्मरणों का एक पठनीय संग्रह है। इन पंक्तियों के लेखक की संस्मरण पुस्तक 'जुग बीते, युग आए' भी चर्चा में है।

आलोचना क्षेत्र में कुछ चुनिंदा कृतियों पर विचार करें तो सर्वप्रथम ध्यान डॉ० गोपालराय के ग्रन्थ 'हिन्दी कहानी का इतिहास' पर जाता है जिसमें 1900-1950 'आख्यायिका से नयी कहानी तक' का कहानी इतिहास दिया गया है। यह अध्ययन हिन्दी कहानी के इतिहास में गहरी पैठ रखता हुआ तत्सम्बन्धी अध्ययन को आगे बढ़ाता है। डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल की महादेवी वर्मा के रचना-संसार पर केन्द्रित पुस्तक 'नवजागरण और महादेवी का रचना-कर्म : स्त्री विमर्श के स्वर' प्रकाशित हुई है जो कि महादेवी के साहित्य-कर्म का पुनर्पाठ है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की पुस्तक 'आलोचना के हाशिए पर' उनके समय-समय पर लिखे गये लेखों का संग्रह है। देवेन्द्रराज अंकुर नाटक, रंगमंच तथा नाट्यालोचन क्षेत्र का एक सुपरिचित नाम है, सम्पूर्ण रंगकर्म को लक्षित कर उनकी पुस्तक 'पढ़ते, सुनते, देखते' आयी है जिसमें इस क्षेत्र की समस्याओं पर व्यापक विमर्श है।

विनोद शाही की कृति 'रामकथा : एक पुनर्पाठ' राम-कथा-मिथक का अपनी ही तरह का विखंडन प्रस्तुत करती है। इसमें दूर की कौड़ी/कौड़ियाँ कथाओं का विखंडन करते हुए भिड़ायी गयी हैं तो कृति अपनी सार्थकता खोती दिखाई देती है।

विद्यानिवास मिश्र की पुस्तक 'हिन्दी की शब्द-सम्पदा' (विविध व्यवहार-क्षेत्रों में हिन्दी की अभिव्यक्ति-क्षमता की एक मनमौजी साहित्यिक पैमाइश) स्वत: ही अपने कथ्य का खुलासा कर रही है। वस्तुत: इस कृति में हिन्दी की बोलियों में प्रचलित अर्थ-सक्षम शब्दों का संकलन और विवेचन बहुत मनोयोगपूर्वक किया गया है। 'कवि का अकेलापन' में मंगलेश डबराल के कवियों और कविता पर लिखे गए आलेखों का संग्रह है। प्रभाववादी आलोचना की शैली में। नरेन्द्र मोहन की पुस्तक 'विभाजन की त्रासदी : भारतीय कथा-दृष्टि' भी एक उल्लेखनीय आलोचनात्मक कृति है। प्रसिद्ध आलोचक नन्ददुलारे वाजपेयी के रचना-कर्म और समय का विश्लेषण करती उनकी जीवनी विजय बहादुर सिंह ने लिखी है 'आलोचक का स्वदेश' शीर्षक से जिसे अपने ही प्रकार की आलोचना-कृति कहा जा सकता है।

पहले तो ग्रन्थावलियाँ विगत लोगों की ही प्रकाशित होती थीं किन्तु अब अपने जीवन काल में ही ग्रन्थावलियाँ प्रकाशित कराने का चलन बढ़ा है। महीप सिंह ने विपुल साहित्य रचा है। उपन्यास, कहानी, स्तम्भ-लेखन, सिक्ख धर्म और इतिहास, बाल-कहानी, भाषा-साहित्य आदि, विविध विधाओं में किए गए उनके लेखन को 'महीप सिंह : रचनावली' के रूप में दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

डॉ० निर्मला जैन के सम्पादन में बारह खण्डों में जैनेन्द्र रचनावली का प्रकाशन हुआ है जिसमें प्रथम चार खण्डों में उपन्यास, पाँचवे खण्ड में कहानी, छठे से नौवें खण्ड में विचार, दसवें खण्ड में सामयिक, ग्यारहवें खण्ड में ललित निबन्ध, संस्मरण तथा बारहवें खण्ड में साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निबन्ध संकलित हैं।

निबन्ध संकलनों में प्रख्यात शिक्षाशास्त्री कृष्ण कुमार का 'सपनों का पेड़' अच्छा संग्रह है। उन्हीं के अनूदित निबन्धों का संग्रह 'शांति का समर' शीर्षक से आया है—दोनों ही संग्रह पठनीय हैं।

दैनिक '*जागरण*' से साभार

—डॉ० पुष्पपाल सिंह, पटियाला

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

जीना चाहता हूँ (कविताएँ) भोलनाथ कुशवाहा, प्रकाशक : अंतिका प्रकाशन, सी-56/यू जी एफ-4, शालीमार गार्डन, एक्स० II, गाज़ियाबाद-201005 (उत्तर प्रदेश), मूल्य : रु० 300.00 मात्र

समय की तीव्रगति के साथ आज हमारा परिवेश, हमारे पारस्परिक व्यवहार, तौर-तरीके तेजी से बदलते जा रहे हैं। इस दौर में हमारे जीवन को सार्थकता देने वाले सामाजिक पर्व-उत्सव, मेला-ठेला आदि सब कुछ बाज़ार बनते जा रहे हैं। इस बाज़ार के खर्चीले 'मॉल' के बाहर खड़ा आम-आदमी हाशिये की विसंगतियों से रू-ब-रू है। अर्थतंत्र के इस नूतन जाल-जंजाल में जकड़े किसान-मज़दूर, दलित-वर्ग, महिलाएँ-बच्चे, नौजवान सभी पूँजी के अदृश्य-शिकंजे द्वारा शोषण का शिकार हो रहे हैं। विषम-जीवन की विसंगतियों और आदमी की यंत्रणाओं को व्यक्त करती ये कविताएँ उसकी जिजीविषा की अभिव्यक्ति हैं। × × ''मैं/हँसना/चाहता हूँ/मगर कहाँ हँसू? मैं/रोना/चाहता हूँ/मगर/कहाँ रोऊँ? मैं/जीना चाहता हूँ/मगर/कहाँ जीऊँ?'' ज़िन्दगी के इसी रचनात्मक-विमर्श के बीच कवि महसूस करता है—× × × ''अब/बोलना/बंद करना पड़ेगा/अब/खड़ा होना पड़ेगा/तूफान के विरुद्ध.... !''

कहो न राघव (प्रबन्ध काव्य)—कवि : देवदत्त देव, प्रकाशक : टैगोर प्रकाशन, नारनौंद (हिसार) 125039, मूल्य : 135/-रु० भारतीय संस्कृति, दर्शन-चिंतन और जीवन-मूल्यों के प्रति आस्थावान कवि का हृदय पौराणिक विसंगतियों के प्रति क्षोभ व्यक्त करते हुए इस प्रबन्ध के माध्यम से बहुत-कुछ कहने की कोशिश करता है। अपने काव्य में 'मिथक' का प्रयोग करते हुए भी वह परम्परागत धारणाओं से मुक्त होकर अपने वर्तमान-परिवेश में जनकनंदिनी सीता से जुड़े उस—'मिथक' के अर्थ उद्घाटित करने का प्रयत्न करता है जो मानवीय-संवेदनाओं को झकझोरती रही है। इसी मिथक के माध्यम से कवि ने मसाज में व्यापक अनास्था और अविश्वास, टूटते परिवारों का संतास, दाम्पत्य जीवन का दर्द, जीवन मूल्यों का अवमूल्यन जैसी अनेक समस्याओं के बीच रागात्मक-सामरस्य खोजने की कोशिश की है। ''अग्निपरीक्षा से गुजरना/दुर्भाव झेलना/स्वजनों के बीच/अलग-थलग पड़ जाना/निर्वासन नहीं तो और क्या था? कहो न प्रिय!''

''हे राघव! केवल सरयू से मत बहो/ अपने मुख से भी कुछ कहो/केवल तुम्हारी अपनी/सुनना चाहती है/कहो न राघव!!''

सोच-विचार (प्रवेशांक, फरवरी 09)—सम्पादक : नरेन्द्रनाथ मिश्र, के० 67/135 ए, ईश्वरगंगी, वाराणसी-221001

अवनी (वसंत 09)—सम्पादक : डॉ० माधुरी रानी 'तर्केप्सुका', अक्षयम, एस० 2/503 क-1-4, सिकरौल, वाराणसी

अक्षर (2008, अंक-7)—सम्पादक : ममता मिश्रा, वर्ल्ड लिटरेसी ऑफ कनाडा, 401, रीचमण्ड स्ट्रीट, पश्चिम स्टूडियो-236, टोरन्टो, ओन्टारियो, कनाडा, वाराणसी शाखा : बी० 2/1, गंगामहल कोठी, भदैनी, वाराणसी

शिविरा (फरवरी 09)—सम्पादक : सुमन सिंह, शिविरा पत्रिका, बीकानेर-334001

जगत विजन (जनवरी 09)—सम्पादक : विजया पाठक, एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल

मंगल प्रभात (फरवरी 09)—सम्पादक : डॉ० रमेश भारद्वाज, गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, 1, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली-110002

कला समय (अक्टू. 08-जन. 09)—सम्पादक : विनय उपाध्याय, एम०एक्स-135, ई-7, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016

बाल वाटिका (फरवरी 09)—सम्पादक : डॉ० भैरूँलाल गर्ग, नंद भवन, कावाँखेड़ा पार्क, भीलवाड़ा (राजस्थान)-311001

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **मार्च 2009** **अंक : 3**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)